अवध की आवाज

www.avadhkaawaz.com

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक समाचार पत्र राजधानी लखनऊ उत्तर प्रदेश से प्रकाशित

वर्ष–12 अंक–79 R.N.I.- UPHIN/2012/45127 लखनऊ रविवार 21 जुलाई 2024 पृष्ठ – 4 मूल्य–3 रूपया

संक्षिप्त समाचार

प्रगति विचारधारा फाउंडेशन द्वारा एक पेड़ मां के नाम कार्यक्रम के तहत लगाए गए 51 पौधे’

लखनऊ। पर्यावरण जल एवं संस्कृति संरक्षण संस्था प्रगति विचारधारा फाउंडेशन द्वारा उत्तर प्रदेश सरकार के कार्यक्रम एक पेड़ मां के नाम जिसमें आज उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा 36 करोड़ 50 लाख पौधे लगाए जाएंगे के तहत संस्था द्वारा आशियाना स्थित अंबेडकर पार्क में 51 पौधे लगाए गए जिसमें फल और फूलदार वृक्ष के अलावा छायादार पेड़ लगाए गए। प्रगति विचारधारा फाउंडेशन के अध्यक्ष नेहा खरे का कहना है कि आज हम जितने वृक्ष लगाएंगे हमारे आने वाली पीढ़ी उतना ही ऑक्सीजन और छाया पाएगी। अपने जीवन में किसी भी शुभ दिन एक पौधा जरूर लगाए। कार्यक्रम में स्टेलर अकादमी की प्रिंसिपलअंजली श्रीवास्तव, एसके अवस्थी, विजयलक्ष्मी, विनीषा खरे व आरजे प्रदीप शुक्ला जी प्रमुख तौर से उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संयोजन दिव्यांग प्रकोष्ठ अवध क्षेत्र भाजपा के संयोजक मुकेश मिश्रा ने किया। मुकेश मिश्रा ने बताया कि पर्यावरण और वृक्ष हमारे जीवन का मूल आधार है हम सबको अपने लिए एक पेड़ जरूर लगाना चाहिए ताकि आने वाले भविष्य में हमें ऑक्सीजन और छाया की कमी ना हो सके।

झोपड़ी में घुसा बेकाबू ट्रक, एक ही परिवार के ४ लोगों की मौत

लखनऊ। राजधानी लखनऊ में बीबीडी यूनिवर्सिटी के पास भीषण हादसा हो गया है। इस हादसे में एक ही परिवार के चार लोगों की मौत हो गई है। मृतक परिवार बाराबंकी का रहने वाला बताया जा रहे है। मृतकों में पति, पत्नी और उनके दो बच्चे शामिल हैं। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेजा दिया और आवश्यक कार्रवाई पूरी करने के बाद घटना की जांच शुरू कर दी है। दरअसल, एक अनियंत्रित ट्रक बेकाबू होकर झोपड़ी में जा घुसा। उसमें सो रहे एक ही परिवार के चार लोगों की मौत हो गई, जबकि एक सात वर्षीया बच्ची बच गई। हादसे के बाद आरोपी ट्रक चालक और क्लीनर को पकड़ लिया गया है।

तीन आईपीएस अफसरों का तबादला, अमित वर्मा बने लखनऊ के जेसीपी एलओ

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में तीन आईपीएस अफसरों का तबादला किया गया है। मिली जानकारी के अनुसार आईपीएस अमित वर्मा को लखनऊ का जेसीपी लॉ एंड आर्डर बनाया गया है। इसके अलावा आईपीएस उपेंद्र अग्रवाल को आईजी ईओडब्लू और आईपीएस संतोष मिश्रा को एसपी सुरक्षा एवं प्रशिक्षण बनाया गया है।

अकबरनगर को हटाकर सौमित्र वन स्थापित किया जा रहा, भगवान राम के छोटे भाई के नाम पर विकास करेंगे : मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कुकरैल नदी तट पर स्थित सौमित्र वन में पौधरोपण कर पौधरोपण जन अभियान-2024 का शुभारंभ किया। इस अभियान के तहत प्रदेश भर में 36.50 करोड़ पौधे लगाए जाएंगे।

लखनऊ। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पांच जून को विश्व पर्यावरण दिवस पर देशवासियों से 'एक पेड़ मां के नाम' लगाने का आह्वान किया था। पर्यावरणविद् चिंतित हैं कि दुनिया में ग्लोबल वॉर्मिंग जीव सृष्टि के लिए नया संकट खड़ा करने जा रहा है। यह संकट मनुष्य के स्वार्थ ने प्रदान किया है, इसलिए इसे नियंत्रित करने की जिम्मेदारी भी मनुष्य पर ही होनी चाहिए। दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के संवैधानिक मुखिया के रूप में पीएम मोदी का यह आह्वान हर भारतवासी के लिए मंत्र बनना चाहिए। पांच जून के बाद से प्रदेश में लगातार पौधरोपण महाभियान के साथ 'एक पेड़ मां के नाम' लगाने का यह गौरव लगभग हर परिवार को प्राप्त होने जा रहा है। यूपी की कुल आबादी 25 करोड़ है, हम 36.50 करोड़ पौधरोपण कर रिकॉर्ड तोड़ने जा रहे हैं। ऐसे में यूपी में आज एक दिन के भीतर हर मातृशक्ति के नाम पर तीन पेड़ लगने जा रहे हैं। ये बातें मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहीं। वहीं सीएम के नेतृत्व में शनिवार को उत्तर प्रदेश में एक दिन (20 जुलाई) में 36.50 करोड़ पौधारोपण महाअभियान का शुभारंभ हुआ। सीएम योगी ने पीएम नरेंद्र मोदी के आह्वान पर 'एक पेड़ मां के नाम' को समर्पित 'पेड़ लगाओ, पेड़ बचाओ जन अभियान–2024 के तहत पौधा लगाया।

सीएम ने सौमित्र वन, कुकरैल नदी तट पर हरिशंकरी का पौधा लगा किया शुभारंभ

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शनिवार को सौमित्र वन, कुकरैल नदी तट, अयोध्या रोड लखनऊ में हरिशंकरी का पौध लगाया। इसके पहले सीएम ने इन पौधों को रक्षासूत्र बांधा। इसी के साथ वृक्षारोपण जन अभियान–2024 (पहली जुलाई से 30 सितंबर 2024) के अंतर्गत एक दिन (20 जुलाई) में प्रदेश में 36.50 करोड़ पौधरोपण महा अभियान का शुभारंभ हुआ। सीएम ने सौमित्र वन के विकास की प्रस्तावित कार्ययोजना का भी अवलोकन किया और इससे जुड़ी लघु फिल्म भी देखी।

कभी अकबरनगर के नाम पर प्रदूषण का माध्यम था, आज सौमित्र वन का गठन हुआ

सीएम योगी ने कहा कि पहले अकबरनगर के नाम पर यह प्रदूषण का माध्यम बना था, आज वहां श्रीराम के अनुज लक्ष्मण जी के नाम पर सौमित्र वन का गठन हुआ है। मैंने भी हरिशंकरी की वाटिका लगाई। इसके दूसरी ओर शक्ति वन बनने जा रहा है। यह भारत की नदी संस्कृति को बचाने का माध्यम बनेगा। 'एक पेड़ मां के नाम' के साथ नई मजबूती प्रदान करने में यह हमारा मार्गदर्शन करेगा।

भूमाफिया ने 1984 के बाद अपने स्वार्थ के लिए कुकरैल नदी को पाटना प्रारंभ किया

सीएम योगी ने कहा कि 50 साल पहले कुकरैल नदी निकलते हुए गोमती मे मिलती थी। 1984 के बाद भूमाफिया ने अपने स्वार्थ के लिए इसे पाटना शुरू किया, जिससे यह नदी नाला में तब्दील हो गई और बस्तियों के ड्रेनेज को उड़ेलने का माध्यम बन गई। एक तरफ नदी को मारा गया तो दूसरी तरफ गोमती नदी को भी प्रदूषित किया गया। लखनऊ में आकर गोमती काली हो गई। प्रदेश सरकार ने तय किया कि कुकरैल में नाइट सफारी बनाएंगे। सीएम ने कहा कि इस क्षेत्र के अतिक्रमण को हटाया गया। जिनकी रजिस्ट्री थी, प्रशासन की मदद से एलडीए ने 3100 परिवारों को एक–एक आवास देकर पुनर्वास किया। जिन भूमाफिया ने जमीन के धंधे से जुड़कर लोगों को ठगा, उनके खिलाफ एफआईआर दर्ज कराकर सुप्रीम कोर्ट तक

लड़कर एलडीए ने इसे खाली करवाया।

ग्लोबल वॉर्मिंग के दुष्प्रभाव के कारण लंबे समय तक याद रहेगा मई–जून का महीना

सीएम योगी ने कहा कि गत वर्ष बड़े क्षेत्रफल में अक्तूबर में बाढ़ आई थी। बाढ़ का समय अगस्त से मध्य सितंबर तक रहता है। पहली बार जुलाई के प्रथम सप्ताह में ही बाढ़ की विभीषिका झेलने को मजबूर होना पड़ा। इससे यूपी के 24 जनपद, 20 लाख से अधिक की आबादी प्रभावित रही। नेपाल व उत्तराखंड की अतिवृष्टि के कारण यह बाढ़ के चपेट में आए। यह ग्लोबल वॉर्मिंग का दुष्प्रभाव है। इस बार मई–जून का महीना लंबे समय तक याद रहेगा। यहां का तापमान अमूमन 42–45 रहता था, लेकिन इस बार यह 47–50 तक पहुंचा। यह दुष्प्रभाव जल का संकट भी खड़ा करेगा। कहीं असमय बारिश तो कहीं सूखे का संकट होगा। इसके कारण होने वाले परिवर्तन से कई जगहों पर अकाल पड़ने की भी संभावना दिखेगी।

सात वर्ष में हमने लगाए 168 करोड़ पौधरोपण, इनमें से 75–80 फीसदी पेड़ जीवित

सीएम योगी ने कहा कि 2017 में यूपी में सरकार बनने के बाद पीएम के मार्गदर्शन व नेतृत्व में हमने पौधरोपण अभियान प्रारंभ किया। सात वर्ष में भाजपा नेतृत्व की सरकार ने 168 करोड़ पौधरोपण किया। प्रदेश के अंदर थर्ड पार्टी के जरिए इनका सर्वे कराया तो पता चला कि 75–80 फीसदी पेड़ अभी भी जीवित हैं और अच्छी वाटिका के रूप में स्थापित हैं। वैश्विक संस्थाएं भी इसे मान्यता दे रही हैं। कार्बन उत्सर्जन से पर्यावरण को क्षति हो रही है। उसके बचाव के लिए किसानों ने पेड़ लगाने के अभियान के साथ अपना पंजीकरण कराया। वैश्विक संस्थाओं ने उनके कार्यों का निरीक्षण किया। ऐसे 10 किसानों को यहां कार्बन क्रेडिट के रूप में धनराशि उपलब्ध करवाने की व्यवस्था की गई। सरकार के प्रयास का परिणाम है कि उत्तर प्रदेश सरकार को इसके लिए 200 करोड़ का अनुदान प्राप्त हो रहा है। कार्बन उत्सर्जन रोकने में इन पेड़ों ने भी बड़ी भूमिका निभाई। पांच वर्ष तक किसानों को लगातार यह धनराशि मिलेगी। पहले चरण में 25 हजार किसानों को इस सुविधा का लाभ प्रदान कर रहे हैं।

वन विभाग के नेतृत्व में हर कोई इस अभियान से जुड़ा है

सीएम योगी ने कहा कि हर कोई आज इस अभियान के साथ जुड़ा है। राज्यपाल सीतापुर में इस अभियान को बढ़ा रही हैं। वन विभाग के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश सरकार के सभी विभाग इससे जुड़े हैं। हर जनपद, सभी मंत्री, सांसद, विधायक, महापौर, ब्लाक प्रमुख समेत जनप्रतिनिधि भी जुड़े हैं। प्रदेश में पौधों की कमी नहीं है। वन व उद्यान विभाग के पास 50 करोड़ और निजी नर्सरी में चार करोड़ पौधे हैं। सीएम ने विश्वास जताया कि सायंकाल होते–होते शुभ सूचना मिलेगी कि उत्तर प्रदेश ने अपने लक्ष्य को प्राप्त किया है। जब 'एक पेड़ मां के नाम' पर लगा रहे हैं तो इसे बचाने की जिम्मेदारी भी हमारी है। पेड़ बचेगा तो पर्यावरण भी बचेगा। पर्यावरण बचेगा तो ग्लोबल वार्मिंग और हीट वेब की विभीषिका से बच पाएंगे। खतरे की घंटी बज चुकी है।

बाराबंकी में विरासत वृक्ष ने कई पीढ़ियों को देखा

सीएम योगी ने कहा कि पीएम आवास योजना के 56 लाख लाभार्थियों के घरों में सहजन का पेड़ भी लग रहा है। प्रदेश में सरकार ने विरासत वृक्षों को बचाने की मुहिम को बढ़ाया है। हमें 100 वर्ष से अधिक आयु के पेड़ों को बचाना है। बाराबंकी में कल्पवृक्ष है। उसकी आयु 5000 वर्ष है। इसने कई पीढ़ियां देखी हैं। द्वापर युग का यह पेड़ मौजूद है। वन मंत्री डॉ. अरुण कुमार सक्सेना ने अतिथियों का स्वागत और प्रधान मुख्य वन संरक्षक–विभागाध्यक्ष सुधीर कुमार शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर महापौर सुषमा खर्कवाल, राज्यसभा सांसद डॉ. दिनेश शर्मा, बृजलाल, संजय सेठ, विधायक ओपी श्रीवास्तव, डॉ. नीरज बोरा, योगेश शुक्ला, विधान परिषद सदस्य मुकेश शर्मा, संतोष सिंह, इंजी. अवनीश सिंह, रामचंद्र प्रधान, अपर मुख्य सचिव (पर्यावरण व वन) मनोज कुमार सिंह आदि मौजूद रहे।

सीएम ने छात्र–छात्राओं को भेंट किया पौधा

विद्यार्थियों में पर्यावरण की अलख जगाने के उद्देश्य से सीएम योगी आदित्यनाथ ने विद्यार्थी अतुल कुमार आनंद, अर्पित सिंह, शिष्ट कुमार तिवारी, पल्लवी शुक्ला, आकांक्षा दुबे को पौध भेंट किया। सीएम ने विद्यार्थियों को पौध लगाने और इसके संरक्षण का आग्रह किया।

10 किसानों को कार्बन क्रेडिट कार्ड से हुई आय का चेक वितरित किया

पर्यावरण को सुरक्षित रखकर किसानों को कार्बन क्रेडिट कार्ड से भी आय होती है। सीएम योगी आदित्यनाथ ने इससे होने वाली आय का चेक किसानों को वितरित किया। चेक पाने वाले किसानों में ठाकरी सिंह, सितारा चंद्र, सलीम अहमद, विजयलक्ष्मी, विनोद कुमार, रामलोटन, प्रेमशंकर, कुलविंदर सिंह बाधवा, प्रभा देवी, व्यासमुनि मिश्र को कार्बन क्रेडिट कार्ड से होने वाली आय का चेक देकर सम्मानित किया।

मंत्रियों ने अलग- अलग जिलों में किया वृक्षारोपण

एक पेड़ मां के नाम का यूपी के भरपूर असर

लखनऊ। पीएम नरेंद्र मोदी के महाभियान एक पेड़ मां के नाम का यूपी में व्यापक असर दिखा। योगी कैबिनेट के सभी मंत्रियों ने अलग अलग जिलों में वृक्षारोपण कर अभियान को गति देने का काम किया। मुख्यमंत्री ने मंत्रियों को निर्देश दिये हैं कि वृक्षारोपण के प्रति लोगों को जागरूक करना है और उन्हें यह भी बताना है कि पौधे लगाने के साथ ही उनके संरक्षण की भी जिम्मेदारी निभानी है।प्रदेश के दिव्यांगजन सशक्तिकरण एवं पिछड़ा वर्ग कल्याण राज्यमंत्री स्वतंत्र प्रभार नरेंद्र कश्यप ने शनिवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के महाभियान ष्एक पेड़ मां के नाम जन अभियान के तहत वृहद वृक्षारोपण कार्यक्रम में हिस्सा लिया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देशानुसार बुलंदशहर और गाजियाबाद में प्रभारी मंत्री के रूप में कार्यक्रम का नेतृत्व किया। बुलंदशहर और गाजियाबाद में पौधारोपण करते हुए कहा, वृक्ष हमारे पर्यावरण का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं और इनका संरक्षण हमारे जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक है। पेड़ न केवल हमें ऑक्सीजन प्रदान करते हैं, बल्कि पर्यावरण को संतुलित रखने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने इस महाभियान में हर नागरिक से भाग लेने का आग्रह किया और जोर दिया कि प्रत्येक व्यक्ति कम से कम एक पेड़ अवश्य लगाए।वहीं प्रदेश के व्यावसायिक शिक्षा, कौशल विकास और उद्यमशीलता राज्यमंत्रीस्वतंत्र प्रभार कपिल देव अग्रवाल ने शनिवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के महाभियान ष्एक पेड़ मां के नाम जन अभियान 2024 के अंतर्गत वृहद वृक्षारोपण कार्यक्रम में हिस्सा लिया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देशानुसार कानपुर नगर के प्रभारी मंत्री के रूप में इस कार्यक्रम में भाग लिया।मंत्री कपिल देव अग्रवाल ने इस अवसर पर पौधारोपण करते हुए कहा, पर्यावरण संरक्षण हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। वृक्षारोपण से न केवल पर्यावरण का संतुलन बना रहता है, बल्कि इससे हमारे जीवन में भी सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। उन्होंने सभी नागरिकों से इस महाभियान में सक्रिय रूप से भाग लेने और अधिक से अधिक पेड़ लगाने का आह्वान किया। उच्च शिक्षा मंत्री योगेंद्र उपाध्याय ने प्रधानमंत्री के महाभियान ष्एक पेड़ मां के नामष जन अभियानके अंतर्गत विशेष वृक्षारोपण कार्यक्रम में भाग लिया। मंत्री योगेंद्र उपाध्याय ने पर्यावरण संरक्षण का संदेश देते हुए कहा, ष्वृक्ष हमारे जीवन का आधार हैं। पेड़ न केवल हमारे वातावरण को शुद्ध रखते हैं, बल्कि हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए भी एक सुरक्षित भविष्य सुनिश्चित करते हैं। हर नागरिक का कर्तव्य है कि वह पर्यावरण की सुरक्षा के लिए कम से कम एक पेड़ लगाए और उसकी देखभाल करे। कार्यक्रम में स्थानीय प्रशासन, शैक्षिक संस्थानों के छात्र–छात्राएं, और विभिन्न सामाजिक संगठनों के सदस्यों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। उन्होंने भी पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की। दूसरी ओर उच्च शिक्षा राज्यमंत्री रजनी तिवारी ने झाँसी में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के महाभियान एक पेड़ मां के नामष जन अभियान के तहत वृहद वृक्षारोपण कार्यक्रम में हिस्सा लिया। रजनी तिवारी ने कहा, यह महाभियान पर्यावरण संतुलन बनाए रखने और हरियाली को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण है। हम सबको इसमें सक्रिय रूप से भाग लेना चाहिए। उन्होंने स्थानीय नागरिकों, छात्रों और सामाजिक संगठनों से भी अधिक से अधिक संख्या में इस अभियान से जुड़ने का आह्वान किया।इसके अलावा प्रदेश के सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम, खादी एवं ग्रामोद्योग, रेशम उद्योग, हथकरघा

एवं हथकरघा वस्त्र उद्योग मंत्री राकेश सचान ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के महाभियान एक पेड़ मां के नाम जन अभियान के अंतर्गत वृहद वृक्षारोपण कार्यक्रम में हिस्सा लिया।मंत्री राकेश सचान ने इस अवसर पर पौधारोपण किया और लोगों को पौधा लगाने और उनकी देखभाल करने का संदेश दिया। उन्होंने कहा, पेड़ हमारे जीवन का आधार हैं और पर्यावरण को संतुलित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हर व्यक्ति को कम से कम एक पेड़ जरूर लगाना चाहिए और उसकी देखभाल करनी चाहिए।

विधानसभा सत्र 29 से,हंगामेदार होने के आसार

विपक्ष के निशाने पर होगी सरकार, सरकार भी जवाब देने को तैयार

नेता प्रतिपक्ष अभी तय नहीं

लखनऊ। उत्तर प्रदेश विधानसभा का सत्र 29 जुलाई से शुरू होगा। विधानसभा सचिवालय ने कल आधिकारिक घोषणा कर दी है। विधानसभा सत्र को लेकर तैयारियां शुरू कर हैं। विधानसभा के मानूसन सत्र के काफी हंगामेदार रहने के आसार हैं। विपक्ष ने सरकार को घेरने के लिए कमर कस ली है। संसद सत्र में सपा ने मोदी सरकार पर जमकर प्रहार किया था, अब यहा सपा योगी सरकार को निशाने पर लेगी। सरकार ने विपक्ष को जवाब देने के लिए रणनीति बनानी शुरू कर दी है। लोकसभा चुनावों के बाद उत्तर प्रदेश में विधानसभा का यह पहला सत्र होगा। चुनाव में समाजवादी पार्टी ने 37 सीटों पर जीत हासिल की है, जबकि भाजपा गठबंधन 34 सीटें जीत पाया, जो बीते लोकसभा चुनाव 2019 से काफी कम है। लोकसभा चुनाव 2014 में भारतीय जनता पार्टी गठबंधन ने 73 और 2019 के चुनाव में 64 सीटों पर जीत हासिल की थी। समाजवादी पार्टी की बढ़ती ताकत और लोकसभा चुनाव में बंपर जीत का असर विधानसभा सत्र के दौरान देखने को मिलेगा। समाजवादी पार्टी सहित विपक्षी दल कई मुद्दों को लेकर आक्रामक दिखाई देगा। किसान, बेरोजगारी, जातीय जनगणना, पेपर लीक अपराध के मुद्दे योगी सरकार को घेरने की कोशिश होगी। सत्ता पक्ष ने विपक्ष के मुद्दों से निपटने के लिए खास रणनीति तैयार कर ली है। अभी नेता प्रतिपक्ष कौन होगा, इसे लेकर अभी संशय बरकरार है। विधानसभा सत्र में कौन नेता प्रतिपक्ष होगा, अभी तय नही। सदन में अभी तक नेता प्रतिपक्ष अखिलेश यादव थे, लेकिन वह कन्नौज सीट से सांसद बन गए हैं। उन्होंने करहल विधानसभा से इस्तीफा दे दिया है। समाजवादी पार्टी ने अभी तक नए नेता प्रतिपक्ष को नहीं चुना है।सदन शुरू होने से पहले ही नेता प्रतिपक्ष चुना जा सकता है। सूत्रों की माने तो पार्टी में नेता प्रतिपक्ष के लिए सबसे बड़ा नाम शिवपाल यादव का है। वह 2009 से 2012 तक नेता प्रतिपक्ष रह चुके हैं। माना जा रहा है कि परिवारवाद का आरोप झेल रही सपा शिवपाल को नेता प्रतिपक्ष नहीं बनाएगी। सपा के राष्ट्रीय महासचिव इंद्रजीत सरोज का नाम नेता प्रतिपक्ष की रेस में है। वर्तमान में विधानसभा में विपक्ष के उपनेता सदन हैं। वह पासी जाति से आते हैं। वह सपा के पीडीए फॉर्मूले में भी फिट बैठते दिखाई दे रहे हैं।इसके अलावा रामअचल राजभर को भी नेता प्रतिपक्ष बनाया जा सकता है। वह पिछड़ा वर्ग से आते हैं। उनकी सभी जातियों में अच्छी पकड़ भी मानी जाती है।

पुलिस प्रशासन कार्यकर्ताओं का कर रहा है उत्पीड़न

मेरी सुरक्षा हटाकर अपनाया है मनमाना रवैया : विधायक

दो बार हत्या की मिल चुकी है धमकी : निषाद

लखनऊ। चौरी चौरा विधायक ई. सरवन निषाद ने बताया कि भारतीय जनता पार्टी के पिछड़ा मोर्चा प्रदेश कार्यसमिति सदस्य दीपक कुमार जायसवाल के साथ चौरी चौरा पुलिस का व्यवहार घोर निंदनीय और मनमानी पूर्ण रवैया है। राजनीति में मुकदमे दर्ज होते हैं इसका यह मतलब नहीं है कि वह अपराधी है और चौरी चौरा पुलिस ने जो दुर्व्यवहार किया है वह सरासर गलत है। कार्यालय में घुसकर एक सम्मानित व्यक्ति को अपराधी कहना यह कहीं से भी सही नहीं है इससे समाज में गलत संदेश जाता है और कार्यकर्ताओं में निराशा होती है ।उन्होंने बताया की एक वर्ष पूर्व मुझे जेल से जान से मारने की धमकी दिया गया था जिसके बाद मुझे सुरक्षा प्रदान किया था जिस सुरक्षा को जिला प्रशासन मनमानी तरीके से हटा लिया है। राजनीति में हम लोग अपने समाज के हक और अधिकारों की लड़ाई लड़ते हैं । विरोधी दल एवं विरोधियों की आंखों में खटकते हैं । तमाम निषाद समाज के नेताओं की निर्मम तरीके से हत्या हुई, चाहे वह जमुना निषाद सहित दर्जनों निषाद समाज के नेताओं की हत्या हुई है। अभी हाल ही में बिहार में निषाद समाज के नेता मुकेश सहनी के पिता की निर्मम हत्या हुई है ,इसके बावजूद मेरी सुरक्षा हटाकर मनमाना रवैया अपना रहा है और सुरक्षा हटाकर जिला प्रशासन मेरे खिलाफ साजिश कर रहा है। उत्तर प्रदेश और पूरे देश में निषाद समाज के जोड़ने और उनके हक और अधिकारों की लड़ाई में लगातार हम लोग संगठन के कार्यों और अन्य गतिविधियों में पूरे प्रदेश और देश में भ्रमण करते हैं। जहां सुरक्षा जरूरी होती है लेकिन सुरक्षा हटाकर गोरखपुर जिला प्रशासन मनमानी कर रहा है।विधायक ने कहा कि जल्द मुख्यमंत्री से मिलकर पूरे मामले को अवगत कराऊंगा दोषी पर कार्रवाई की मांग करूंगा।

सम्पादकीय

राहुल गांधी का हिन्दू धर्म बनाम आरएसएस का हिंदुत्व

लोकसभा के हालिया (2024) चुनावों के परिणामों ने संसद को बहस और चर्चा का सार्थक मंच बना दिया है। वहां अब प्रतिपक्ष की आवाज भी सुनाई देती है। राष्ट्रपति के अभिभाषण पर धन्यवाद ज्ञापन पर हुई चर्चा के दौरान विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने अपने भाषण में देश के समक्ष प्रस्तुत विभिन्न चुनौतियों और समस्यायों पर चर्चा की। उनके भाषण के एक हिस्से में उन्होंने हिन्दू धर्म की प्रकृति और चरित्र पर भी बात की। उनके भाषण का यह हिस्सा शायद सदन की कार्यवाही से विलोपित कर दिया गया है। राहुल गांधी ने कहा कि– हिन्दू धर्म सत्य और अहिंसा पर आधारित है। भारत, अहिंसा का देश है, भय का नहीं। हमारे सभी महापुरुषों ने अहिंसा का आचरण करने और भय पर विजय प्राप्त करने की बात कही है।श फिर, भाजपा सदस्यों की ओर इशारा करने हुए उन्होंने कहा, जो लोग स्वयं को हिन्दू कहते हैं, वे दिन–रात हिंसा और नफरत की बात करते हैं और असत्य बोलते हैं।श

उसके बाद से राहुल के कथन के खिलाफ साधुओं ने कई विरोध प्रदर्शन किए और अहमदाबाद में कांग्रेस के कार्यालय पर हमला हुआ। संघ परिवार यह झूठ फैला रहा है कि राहुल ने सभी हिन्दुओं को हिंसक कहा है। राहुल ने इसके उलट यह साफ किया है कि उनकी दृष्टि में हिन्दू धर्म सत्य, अहिंसा और प्रेम पर आधारित है। संघ के नेता कह रहे हैं कि नेहरु से लेकर राहुल गांधी तक सभी की विचारधारा का जमीनी यथार्थ से कोई लेना–देना नहीं रहा है। उनके अनुसार, नेहरु–गांधी परिवार के सभी नेता केवल अपना वोट बैंक बचाने की जुगत में अल्पसंख्यकों से जुड़े मसले उठाते रहे हैं। इंडिया गठबंधन के कई नेताओं ने हिन्दू धर्म को मानवतावाद से जोड़ने के राहुल गांधी के प्रयास का समर्थन किया है। कई सालों से देश में हिन्दू धर्म और हिंदुत्व ये दोनों शब्द इस्तेमाल किये जा रहे हैं। उद्धव ठाकरे ने कहा कि राहुल गांधी का हिन्दू धर्म ही उनका हिंदुत्व है। आरएसएस ने कर्ताधर्ता नेहरु की इसलिए भी आलोचना करते हैं क्योंकि उनके द्वारा शुरू किये गए साम्प्रदायिकता विरोधी अभियान के निशाने पर आरएसएस था। वे नेहरु के इसलिए भी खिलाफ हैं क्योंकि उन्होंने राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद के हाथों सोमनाथ मंदिर के उद्घाटन का विरोध किया है। संघ कहता है कि उसका हिंदुत्व, दयानंद सरस्वती, स्वामी विवेकानंद, बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय एवं श्यामाप्रसाद मुखर्जी के विचारों पर आधारित है। सच यह है कि संघ की विचारधारा का दयानंद सरस्वती और स्वामी विवेकानंद के विचारों से कोई लेना–देना नहीं हैं। संघ केवल उन दोनों के नामों का इस्तेमाल लर अपनी विचारधारा को स्वीकार्य बनाने की कोशिश कर रहा है। हिन्दू धर्म किसी पैगम्बर पर आधारित नहीं है और इसलिए उसकी अलग–अलग ढंग से व्याख्याएं की जाती रही हैं। हिन्दू धर्म के पवित्र ग्रंथों में शहिन्दूश नहीं है। वेदों, उपनिषदों, गीता और मनुस्मृति में कहीं भी यह शब्द नहीं है। इस शब्द का इस्तेमाल सिन्धु नदी के पश्चिम में रहने वाले इस विशाल नदी के पूर्व में रहने वालों के लिए प्रयुक्त करते थे। चूंकि वे स का उच्चारण ह करते थे इसलिए सिन्धु शब्द हिन्दू बन गया। अतरू हिन्दू शब्द का मूल अर्थ था सिन्धु नदी से लेकर समुद्र तक की भूमि पर रहने वाले सभी लोग। इस विशाल भूभाग में मुख्यतः वैदिक धर्म (जिसे हम ब्राह्मणवाद भी कह सकते हैं), आजीवक, तंत्र, नाथ, शैव, बौद्ध व जैन परम्पराएं प्रचलित थीं। बाद में जैन व बौद्ध धर्मों को छोड़कर, इन सभी परम्पराओं का मिश्रण हिन्दू धर्म कहलाने लगा। ब्राह्मणवाद के अलावा अन्य सभी परम्पराएं श्श्रमणश कहलाती थीं।ब्राह्मणवाद और श्रमणवाद में मुख्य अंतर यही था कि ब्राह्मणवाद में जाति प्रथा थी जबकि श्रमणवाद में नहीं थी। हिन्दू धर्म शब्द के उदय के बारे में इतिहासविद डी.एन. झा ने भारतीय इतिहास कांग्रेस, 2006, में अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा था कि, श्यह बिलकुल सही है कि यह शब्द (हिन्दू), पूर्व–औपनिवेशिक भारत में प्रचलित था। मगर ब्रिटिश अध्येताओं ने 18वीं सदी के अंत या 19वीं सदी की शुरुआत में इस शब्द का उपयोग करना शुरू किया और धीरे–धीरे यह व्यापक रूप से प्रयुक्त होने लगा। हिन्दू शब्द भारतीय उपमहाद्वीप के उन सभी रहवासियों के लिए प्रयुक्त किया जाता था जो मुसलमान, ईसाई, सिक्ख या जैन नहीं थे। चूंकि हिन्दू धर्म के कोई निश्चित ग्रन्थ और सिद्धांत नहीं थे इसलिए ब्राह्मणवादियों ने वेदों और मनुस्मृति को पवित्र ग्रन्थ घोषित कर दिया। हिन्दू धर्म की समझ में भी अंतर हैं। अम्बेडकर के दृष्टि में ब्राह्मणवाद और जाति प्रथा ने हिन्दू धर्म को जकड़ रखा है। यही कारण है कि उन्होंने मनुस्मृति का दहन किया। दूसरी ओर महात्मा गांधी स्वयं को सनातनी हिन्दू कहते थे। उन्होंने यंग इंडिया के 6 अक्टूबर 1921 के अंक में लिखा, हिन्दू धर्म सभी से कहता है कि वे अपनी–अपनी आस्था और धर्म के आधार पर ईश्वर की आराधना करें और इस प्रकार वह अन्य धर्मों के साथ शांतिपूर्ण सहअस्तित्व बनाये रख पाया है। यही तो बहुवाद है। यही तो अंतर्धार्मिक रिश्तों की बुनियाद होनी चाहिए. और अब राहुल गांधी ने कहा है कि सत्य, प्रेम और अहिंसा हिन्दू धर्म का मूल आधार हैं। हिंदुत्व शब्द को 1892 में चंद्रकांत बसु ने गढ़ा था और इसे आध्यात्मिक ऊंचाईयां अर्जित करने के आदर्शवादी लक्ष्य से जोड़ा था। राजनीति के सन्दर्भ में हिंदुत्व शब्द के इस्तेमाल की शुरुआत सावरकर ने अपनी पुस्तक एस्सेनशियल्स ऑफ हिंदूइस्म (1923) में इसे परिभाषित कर की थी। सावरकर का हिंदुत्व आर्य नस्ल, सिन्धु से समुद्र तक की पवित्र भूमि एवं ब्राह्मणवादी संस्कृति तक सीमित है। सावरकर, बौद्ध धर्म के अहिंसा के सिद्धांत के कड़े आलोचक थे और मानते थे कि बुद्ध द्वारा अहिंसा का प्रचार करने से ही भारत कमजोर बना। यह कहना इतिहास की गलत समझ पर आधारित है। उस समय आधुनिक अर्थ में भारत जैसा कोई राष्ट्र नहीं था। और अगर हम राजाओं के साम्राज्यों को राष्ट्र मानें तो हमें यह याद रखना चाहिए कि सम्राट अशोक, जिन्होंने बौद्ध धर्म अपना लिया था, का साम्राज्य प्राचीन भारत का सबसे बड़ा साम्राज्य था। सावरकर के अनुसार हिन्दू केवल वही है जिसकी पितृभूमि और पवित्रभूमि दोनों भारत में हैं। सावरकर से सीख लेकर आरएसएस इस्लाम और ईसाईयत को विदेशी धर्म मानता है और प्राचीन धर्मग्रंथों (मनुस्मृति आदि) का अनुमोदन करते हैं। संघ ने हिंसा को अपनी विचारधारा का हिस्सा बना लिया है और नागपुर स्थित उसके मुख्यालय में तरह–तरह के हथियारों का संकलन हैं, जिनकी दशहरा के दिन पूजा की जाती है। आरएसएस की शाखाओं में मुस्लिम शासकों जैसे बाबर और औरंगजेब का दानवीकरण कर और हिन्दू राजाओं जैसे राणाप्रताप, शिवाजी और पृथ्वीराज चौहान का महिमामंडन कर नफरत फैलाई जाती है। आरएसएस राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन को भी पसंद नहीं करता क्योंकि उसमें सभी धर्मों के लोगों ने भाग लिया था। संघ का दावा है कि वह हिन्दुओं का प्रतिनिधि है और वह मंदिरों के विध्वंस, बीफ और जबरिया धर्मपरिवर्तन जैसे भावनात्मक मसले उठाता रहता है। यह बात सरदार वल्लभभाई पटेल ने 1948 में संघ पर प्रतिबन्ध लगाने के बाद कही थी। उन्होंने कहा था, श्उनके सभी भाषण, सांप्रदायिक जहर से भरे रहते थे जिसके अंतिम नतीजे में देश को गांधीजी के बेशकीमती जीवन के बलिदान की पीड़ा से गुजरना पड़ा। जहां महात्मा गांधी और राहुल गांधी जैसे नेता हिन्दू धर्म के मानवीय पक्ष पर जोर देते हैं वहीं सावरकर से प्रेरित आरएसएस नफरत और हिंसा की राह पर चलते रहे हैं। अम्बेडकर ने भी हिन्दू धर्म पर ब्राह्मणवादियों के वर्चस्व की खिलाफत की थी। राहुल गांधी, हिन्दू धर्म को समावेशी और अहिंसक चरित्र देने का प्रयास कर रहे हैं।

सेहत की कैंटीन

यह तथ्य किसी से छिपा नहीं कि भारत धीरे–धीरे मधुमेह, हृदय रोग व मोटापे की राजधानी बनता जा रहा है। देश के हर चार में से एक व्यक्ति मोटापे व प्री–डायबिटिक स्थिति में पहुंच गया है। संकट इसलिए बड़ा है कि किशोर व युवा भी इसके चपेट में आ रहे हैं। रात दिन मोबाइल–लेपटॉप में लगे रहने और शारीरिक श्रम से दूर पीढ़ी के लिए फास्ट फूड खासा घातक साबित हो रहा है। यही वजह है कि कई सर्वेक्षणों के निष्कर्ष व विशेषज्ञों की सिफारिश के बाद देश के विश्वविद्यालयों का नियमन करने वाली राष्ट्रीय संस्था विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने कॉलेजों को निर्देश दिये हैं कि कॉलेज की कैंटीन में पिज्जा, बर्गर और समोसे जैसे जंक फूड की बिक्री पर रोक लगाई जाए।। दरअसल, छात्रों में बढ़ते मोटापे और मोटापे से जनित अन्य रोगों की समस्या के मद्देनजर यूजीसी ने कहा है कि शैक्षणिक संस्थानों में स्वास्थ्य के लिये नुकसानदायक खाद्य पदार्थों की बिक्री पर तुरंत रोक लगायी जाए। निस्संदेह, नई पीढ़ी में जंक फूड को लेकर खासा क्रेज है, लेकिन युवाओं के स्वास्थ्य को लेकर कोई समझौता नहीं किया जा सकता। हाल के दिनों में युवाओं में मधुमेह, मोटापे व हृदय संबंधी विकार के मामले तेजी से बढ़े हैं। कुछ माह पूर्व आयी आईसीएमआर की रिपोर्ट में भी चिंता जताई गई थी कि देश में तेजी से बढ़ रहे अल्ट्रा–प्रोसेस्ड खाद्य पदार्थों में वसा की अधिक मात्रा पायी जाती है। जो मोटापा बढ़ने का बड़ा कारण है। जो कालांतर हृदयाघात,डायबिटीज आदि गैर संक्रामक बीमारियों की वजह बनता है। आईसीएमआर ने अच्छे स्वास्थ्य को मानव के मौलिक विशेषाधिकार की संज्ञा दी है। दूसरी ओर मानव पोषण, महामारी विज्ञान, चिकित्सा शिक्षा, बाल रोग व सामुदायिक उपचार आदि के स्वतंत्र विशेषज्ञों के राष्ट्रीय थिंक टैंक एनएपीआई ने भी इसी प्रकार की चिंताएं जतायी हैं। एनएपीआई ने भी शैक्षणिक संस्थानों में अस्वास्थ्यकर खाद्य पदार्थों पर तुरंत रोक लगाने की सलाह दी है। साथ ही कैंटीन में स्वस्थ खाद्य पदार्थों के विकल्प बढ़ाने पर जोर दिया है।बहरहाल, अब शिक्षण संस्थाओं के प्रबंधकों व शिक्षकों का दायित्व है कि कालेजों की कैंटीनों में स्वस्थ खाद्य पदार्थों के विकल्प उपलब्ध करायें। साथ ही छात्रों को इस दिशा में आगे बढ़ने को प्रेरित करें। निस्संदेह, केवल यूजीसी के निर्देशों से हालात बदलने वाले नहीं हैं। दरअसल, यूजीसी ने इस बाबत पहली बार दिशा–निर्देश नहीं दिये हैं। इससे पहले दस नवंबर 2016 तथा इक्कीस अगस्त 2018 को भी इसी तरह के परामर्श जारी किये गए थे। विडंबना यह है कि युवा पीढ़ी पाश्चात्य खानपान शैली का अंधानुकरण कर रही है। किसी देश का खानपान उस देश की जलवायु तथा रोगों की आनुवंशिकता के आधार पर तय होता है। युवा पीढ़ी मौसमी फल, सब्जियों तथा परंपरागत खाद्य पदार्थों से परहेज कर रही है। सदियों से हमारे खानपान में उन तमाम खाद्य पदार्थों से परहेज किया गया, जो तामसिक प्रवृत्ति के हैं और त्रिदोष को बढ़ावा देने वाले हैं। सही मायने में हमारे खानपान में एसिड बढ़ाने वाले पदार्थों का बोलबाला है। जबकि हमें क्षारीय प्रवृत्ति वाले खाद्य पदार्थों का सेवन भी संतुलन के लिये करना चाहिए। दरअसल, समय के साथ देश में संपन्नता आई है और समृद्ध खानपान की शैली विकसित हुई है, लेकिन विडंबना यह है कि हमारी जीवन शैली में श्रम की प्रधानता घटी है। श्रमशील व गतिशील व्यक्ति को सब कुछ हजम हो जाता है, लेकिन निष्क्रिय जीवन शैली मोटापे, मधुमेह व हृदय रोगों को बढ़ावा देती है। चिंता की बात यह है कि जो रोग पहले व्यक्ति को पचास साल के बाद होते थे, वे अब किशोरों व युवाओं को अपनी गिरफ्त में ले रहे हैं। हाल ही में एक प्रतिष्ठित अंतर्राष्ट्रीय मैगजीन ने खुलासा किया था कि कैसे भारत में पचास फीसदी लोग सप्ताह में जरूरी व्यायाम व सैर तक नहीं करते। निश्चित रूप से यह एक राष्ट्रीय संकट का प्रश्न है। जिसके चलते आने वाले दिनों में देश गैर संक्रामक रोगों की राजधानी बनने की ओर अग्रसर है। शिक्षकों के साथ अभिभावकों को भी छात्रों को स्वस्थ खानपान के प्रति जागरूक करना होगा।

कांवड़ यात्रा से पहले विवादास्पद फैसला

उत्तर प्रदेश पुलिस ने मुजफ्फरनगर और पश्चिमी यूपी के अन्य इलाकों में कांवड़ यात्रा मार्ग पर होटल, ठेले पर फल या अन्य खाने–पीने का सामान बेचने वाले लोगों से मालिक और कर्मचारियों के नाम लिखकर लगाने को कहा है। और कम से कम इन पंक्तियों के लिखे जाने तक इस विवादास्पद फैसले को वापस नहीं लिया गया है। कांवड़ यात्रा को लेकर पहले भी कई किस्म के धार्मिक पूर्वाग्रह देखे जा चुके हैं। जैसे कांवड़ यात्रा के लिए करीब 33 हजार पेड़ों को काटने का फैसला लिया गया, ताकि सड़क चौड़ी हो और श्रद्धालुओं को सुविधा हो। जब पेड़ों के काटे जाने पर विरोध दर्ज कराया गया तब राष्ट्रीय हरित प्राधिकरण ने उन इलाकों की सेटेलाइट तस्वीर मांगी, जहां पेड़ काटे गए। लेकिन इस कार्रवाई से हरियाली पर चली कुल्हाड़ी बेअसर तो नहीं हुई। इसी तरह कुछ समय पहले कांवड़ियों पर यूपी के एक डीजीपी ने सरकारी हेलिकॉप्टर से फूल बरसाए थे, जो सरासर प्रशासनिक दायित्व और नैतिकता का उल्लंघन था। सरकार और प्रशासन की ओर से लिए गए इन फैसलों को मानिसक दिवालियापन की श्रेणी में रखा जा सकता है। लेकिन अब जो फैसला लिया है, वह खुली चेतावनी दे रहा है कि भारत तेजी से नाजी दौर वाली जर्मनी के युग में धकेला जा रहा है। पाठकों को याद दिला दें कि जर्मन तानाशाह हिटलर के प्रचार मंत्री जोसेफ गोएबल्स ने मई 1938 में जर्मन यहूदियों के लिए सामान्य पहचान चिह्न का सुझाव दिया था। जिसके बाद नाजी अधिकारियों ने 1939 और 1945 के बीच यहूदियों को पीले सितारे वाले बैज को लगाने का आदेश दिया था, ताकि उन्हें अलग से पहचाना जा सके और उनकी गतिविधियों पर नजर रखी जाए। जो यहूदी अपनी पहचान बताने वाले बैज को नहीं पहनता था, उसे अपमानित और दंडित किया जाता था। पहचान के नाम पर नागरिकों में भेद करने का जो काम सौ साल पहले जर्मनी में हुआ, क्या वैसे ही किसी कृत्य के लिए आज के भारत में कोई स्थान होना चाहिए, यह एक गंभीर सवाल है, जिस पर सभी लोगों को विचार करना चाहिए। वैसे उप्र पुलिस के इस आदेश की निंदा होनी शुरु हो चुकी है। अखिलेश यादव और असद्दुदीन ओवैसी जैसे नेताओं ने इसकी भर्त्सना की है। माननीय न्यायालय से यह अपेक्षा जतलाई गई है कि वह इस संबंध में स्वतः संज्ञान लेगी। हालांकि उप्र पुलिस ने इस फैसले के पक्ष में दलील दी है कि यात्रियों को शकिसी भी भ्रम से बचने के लिएश ये निर्देश कांवड़ यात्रा रूट के लिए खासतौर पर जारी किए गए हैं। पुलिस का कहना है कि ऐसा इसलिए किया जा रहा है कि ताकि कांवड़ियों के बीच कोई भ्रम न हो और भविष्य में कोई आरोप न लगे, जिससे कानून व्यवस्था की स्थिति पैदा हो। पुलिस ने दावा किया कि हर कोई अपनी मर्जी से इसका पालन कर रहा है। एक लचर तर्क यह भी दिया गया है कि इस आदेश का इरादा किसी भी प्रकार का धार्मिक भेदभाव पैदा करना नहीं था, बल्कि केवल भक्तों को सुविधा देना था। पुलिस अधिकारियों ने कहा है कि, अतीत में ऐसे मामले सामने आए हैं, जहां कांवड़ मार्ग पर सभी प्रकार के खाद्य पदार्थ बेचने वाले कुछ दुकानदारों ने अपनी दुकानों का नाम इस तरह रखा, जिससे कांवड़ियों के बीच भ्रम पैदा हुआ और कानून–व्यवस्था की स्थिति पैदा हो गई। अब सवाल यह है कि कानून व्यवस्था को बनाए रखने की जिम्मेदारी पुलिस की है या दुकानदारों की। इस देश का संविधान किसी को भी अपनी मर्जी का नाम रखने से नहीं रोकता है, फिर चाहे वह संतान का नाम हो या दुकान का। और अगर धर्म का पालन करने के नाम पर कांवड़ लेकर निकल रहे लोगों में इतनी समझ और सहनशक्ति नहीं है कि वह किसी के नाम से ही आहत हो जाएं तो फिर उनके धार्मिक होने पर ही संदेह है।

अगर किसी को दूसरे धर्म के लोगों से खाद्य सामग्री खरीदने में धर्मभ्रष्ट होने का खतरा दिखता है, तो फिर ऐसे संकुचित मानसिकता के लोगों को यह भी पता कर लेना चाहिए कि जिस सड़क पर वो चलेंगे, उसे बनाने वाले कौन से धर्म के थे, जिन कपड़ों को वे पहनेंगे, उसका धागा कहां से आया, जिस कांवड़ को वे ढोएंगे, उसे किस जाति, धर्म के लोगों ने बनाया। रास्ते में जिन शामियानों के नीचे वो आराम करने बैठेंगे या जिन लाउड स्पीकरों पर वे तेज आवाज में अपनी भक्ति का प्रदर्शन करेंगे, उसे किन लोगों ने बनाया है। केवल विधर्मी दुकानदारों से सामान न खरीद कर क्या होगा, धर्मांधता का पालन करना है तो फिर सारे मापदंडों के साथ करें। यह देखना दुखद है कि यह धर्मांधता अब राज्य प्रायोजित हो चुकी है। कोरोनाकाल में तब्लीगी जमात के लोगों पर पहले कोरोना के प्रसार का इल्जाम लगाया गया, तब अस्पतालों में इसी तरह की शिनाख्त का सिलसिला शुरु हुआ। उसी दौरान अल्पसंख्यकों के आर्थिक बहिष्कार के कई उदाहरण सामने आए। तब भी इन कार्यों की निंदा हुई, लेकिन छोटे पैमाने पर और समाज ने तब सरकार से इस नफरती कारोबार का हिसाब नहीं मांगा। नतीजा ये हुआ कि आर्थिक जेहाद का सिलसिला आगे भी चला और अब बात नाम से पहचान उजागर करने तक पहुंच गई है।

सर्वोच्च न्यायालय में मनी बिल को चुनौती, सत्तारूढ़ भाजपा की कमजोरी और बढ़ी

अगर आधार एक पैसे का मामला है, तो किसी भी चीज का मतलब कुछ भी हो सकता है। यह उन प्रमुख दुविधाओं में से एक होगी, जिस पर भारत के सर्वोच्च न्यायालय की सात सदस्यीय संवैधानिक पीठ विचार करेगी, जब वह विवादास्पद विधेयकों को आगे बढ़ाने में विधायी बाधाओं को दूर करने के लिए मोदी सरकार द्वारा मनी बिल वाले मार्ग के अनुचित इस्तेमाल के खिलाफ याचिकाओं पर विचार–विमर्श शुरू करेगी। मुख्य न्यायाधीश डी.वाई. चंद्रचूड़ ने इस सप्ताह फैसला किया कि समय आ गया है कि विद्वान न्यायाधीश काम पर लग जाएं, क्योंकि पिछले साल अक्टूबर में जब से बेंच की घोषणा की गयी थी, तब से बेंच लगभग निष्क्रिय रही है। यह मुद्दा भारतीय संविधान की धारा110 की व्याख्या और अनुप्रयोग पर केंद्रित है, जो परिभाषित करता है कि मनी बिल क्या होता है। धन विधेयक, सामान्य विधेयकों के विपरीत, राज्यसभा की स्वीकृति के बिना पेश और पारित किये जा सकते हैं, जिससे विपक्ष के प्रभुत्व वाले उच्च सदन की जांच और संभावित अवरोध को प्रभावी ढंग से दरकिनार किया जा सकता है। सरकार ने आधार कानून को धन विधेयक के दायरे में लाने के लिए कमजोर वर्गों को प्रभावी सब्सिडी प्रदान करने के साधन के रूप में आधार की एक दूरगामी परिभाषा प्रदान की थी। लेकिन इसने व्यापक रूप ने लोगों को चौंका दिया था। विपक्षी दलों और कानूनी विशेषज्ञों सहित आलोचकों का तर्क है कि सरकार संसदीय निगरानी से बचने और जल्दबाजी में कानून बनाने पर रोक लगाने के लिए राज्यसभा की भूमिका को कमजोर करने के उद्देश्य से धन विधेयक प्रावधान का दुरुपयोग कर रही है। उनका तर्क है कि धन विधेयक के रूप में वर्गीकृत कई विधेयक संवैधानिक मानदंडों को पूरा नहीं करते हैं और राज्यसभा में विपक्ष को दरकिनार करने के लिए उन्हें गलत तरीके से वर्गीकृत किया गया है। उनका तर्क है कि यह प्रथा लोकतांत्रिक विचार–विमर्श और विधायी जांच के सिद्धांतों को नष्ट करती है जो मजबूत और अच्छी शासन व्यवस्था के लिए आवश्यक हैं। राज्यसभा में विधायी गतिरोध का सामना कर रही मोदी सरकार ने प्रमुख सुधारों और ऐतिहासिक कानूनों को आगे बढ़ाने के लिए तेजी से इस मार्ग की ओर रुख किया है। जहां तक भाजपा और मोदी सरकार का सवाल है, स्थिति एक कीचड़युक्त अतीत से और अधिक कीचड़ वाले भविष्य की ओर इशारा करती है। राज्यसभा में भाजपा की ताकत घटकर 86 रह गयी है, जिससे एनडीए की विधायी क्षमता प्रभावित हुई है। अन्य सहयोगियों को शामिल करने पर, ताकत बढ़कर केवल 101 रह जाती है। इसका उच्च सदन में विवादास्पद विधेयकों के पारित होने पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। दूसरी ओर, सरकार को लगातार राज्य चुनावों के बाद बढ़ते विरोध का सामना करना पड़ रहा है, जहां विपक्षी दलों ने अपनी सीटों की संख्या में वृद्धि के साथ बढ़त हासिल की है। कम ताकत और महत्वपूर्ण मुद्दों पर बढ़ती विपक्षी एकता के साथ, सरकार को विवादास्पद तरीकों का सहारा लिए बिना विधायी जनादेश हासिल करने में एक कठिन कार्य का सामना करना पड़ रहा है। कार्यकारी आदेशों और अध्यादेशों के माध्यम से शासन की प्रभावकारिता और वैधता पर भी इस संदर्भ में सवाल उठाये गये हैं, जिससे लोकतांत्रिक शासन और संसदीय जवाबदेही के बारे में चिंताएं बढ़ गयी हैं। विभिन्न हितधारकों द्वारा दायर याचिकाओं में धन विधेयक लेबल के तहत पारित विधेयकों की वैधता पर सवाल उठाया गया है, जिसमें आरोप लगाया गया है कि इस तरह का वर्गीकरण मनमाना था और राज्यसभा में बहस और संशोधन से बचने के लिए बनाया गया था। ये याचिकाएँ विशिष्ट विधायी उदाहरणों को उजागर करती हैं, जहां कराधान और वित्त से संबंधित विवादास्पद विधेयकों को वित्तीय मामलों से परे उनके व्यापक निहितार्थों के बावजूद धन विधेयक के रूप में पारित किया गया। सर्वोच्च न्यायालय के समक्ष कानूनी चुनौती केवल संवैधानिक प्रावधानों की तकनीकी व्याख्या के बारे में नहीं है, बल्कि भारत के लोकतांत्रिक ढांचे के लिए व्यापक निहितार्थों के बारे में भी है। यह कार्यपालिका और विधायी शाखाओं के बीच शक्तियों के संतुलन और संवैधानिक सिद्धांतों को बनाये रखने में न्यायिक निगरानी की भूमिका के बारे में मौलिक प्रश्न उठाता है। इन चुनौतियों के जवाब में, सरकार ने विधायी गतिरोध को दूर करने और महत्वपूर्ण सुधारों के कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक उपकरण के रूप में धन विधेयक मार्ग के अपने उपयोग का बचाव किया है। यह तर्क देता है कि विधेयकों को धन विधेयक के रूप में वर्गीकृत करना कानूनी सलाह और संसदीय परम्परा के अनुसार किया गया था, जो आर्थिक और राजकोषीय नीति के मामलों में शीघ्र निर्णय लेने की आवश्यकता पर बल देता है। इन याचिकाओं पर सर्वोच्च न्यायालय के अंतिम फैसले का बेसब्री से इंतजार किया जा रहा है क्योंकि इसमें भविष्य की विधायी प्रथाओं और संवैधानिक प्रावधानों की व्याख्या के लिए एक मिसाल कायम करने की क्षमता है। तात्कालिक कानूनी निहितार्थों से परे, इस मामले का भारत के लोकतांत्रिक शासन, न्यायिक स्वतंत्रता और सरकार की विभिन्न शाखाओं के बीच शक्ति संतुलन पर व्यापक प्रभाव है।

मिर्जापुर, जिसकी असल पहचान कुछ और है

ओवर द टॉप यानी ओटीटी का मशहूर प्रोग्राम है मिर्जापुर। इसकी लोकप्रियता इतनी है कि इसका तीसरा सीजन दर्शकों के सामने हाजिर है। उम्मीद की जा रही है कि जिस तरह इसके शुरूआती दो सीजन को दर्शकों का प्यार हासिल हुआ, एक बार फिर वैसा ही स्नेह हासिल करने में यह कामयाब रहेगा। मिर्जापुर की सफलता का राज है, इसका बोल्ड कथानक और संवाद। जिसमें ठेठ भोजपुरी अंदाज में गालियों की भरमार है, परिवार के बीच अविश्वसनीय लगने वाला व्यभिचार है। माफिया है, माफिया है तो गोली–बारूद भी होगा। वर्चस्व की जंग भी होगी और राजनीति से उसके काले रिश्ते भी होंगे। जब इतना कुछ होगा तो राजनीति की गोटियां भी होंगी। राजनीतिक उठापटक भी है और राजनीति को साधने के लिए धन, ताकत और सेक्स का तड़का भी है।

लेकिन इसमें कुछ नहीं है तो वह है मिर्जापुर। मिर्जापुर की ना तो इसमें मिठास है, ना ही संस्कृति है और ना ही इतिहास। इसलिए जो भी ओटीटी वाले मिर्जापुर से गुजरता है, वह मान लेता है कि मिर्जापुर की धरती त्रिपाठी परिवार जैसे माफियों की बारूद की गंध और गोली की आवाज के बीच ही कहीं अपना अस्तित्व बचाए हुए है, जहां परिवार के अंदर ही अवैध संबंधों की बहुलता है। जहां हर किसी की जिंदगी माफिया के ही इर्द–गिर्द घूमती रहती है। इसके पहले सीजन के सुपर हिट होते वक्त दिल्ली में तैनात एक दक्षिण भारतीय बड़े अधिकारी ने पूछ लिया था कि क्या मिर्जापुर ऐसा ही है, जहां हर व्यक्ति गालियां ही देता रहता है, जहां माफिया राज ही चलता रहता है।

ओटीटी पर मिर्जापुर का जब भी नया सीजन आता है, मिर्जापुर के निवासियों के सामने नए सिरे से सवालों की बौछार शुरू हो जाती है। जाहिर है कि वे सारे सवाल मिर्जापुर सीरीज के जरिए रची गई छवि के इर्द–गिर्द ही होती है। मिर्जापुर के मूल निवासी एक बड़े पत्रकार ने तो अब इस बारे में सफाई देनी ही बंद कर दी है। आखिर कितने लोगों को वे बता सकते हैं कि मिर्जापुर वैसा ही नहीं है, जैसा ओटीटी के सीरीज में दिखाया जा रहा है।

इसे संयोग ही कहेंगे कि मिर्जापुर से जुड़ी एक काल्पनिक रचना रही चंद्रकांता और दूसरी काल्पनिक रचना है मिर्जापुर सीरीज। उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध में मिर्जापुर की ही धरती पर रची गई चंद्रकांता। बाबू देवकीनंदन खत्री की यह रचना काल्पनिक होते हुए भी इतनी दिलचस्प है कि उसे अगर पढ़ना शुरू किया तो खत्म किए बिना छोड़ना आसान नहीं है। 1888 में यह रचना छपी थी, तब उसकी लोकप्रियता ऐसी थी कि उसे पढ़ने के लिए लोगों ने हिंदी तक सीखी। कुछ वैसी ही लोकप्रियता मिर्जापुर सीरीज की भी है। कुछ वैसी ही काल्पनिक सीरीज भी है। लेकिन चंद्रकांता और मिर्जापुर में एक अंतर है। चंद्रकांता मिर्जापुर की छवि को नए सिरे से गढ़ती है, जबकि मिर्जापुर उसे बदरंग बनाती है। मिर्जापुर वैसा नहीं है, जैसा उसे सीरीज दिखाता है। मिर्जापुर की और भी पहचान है। यह बात और है कि तकनीकी क्रांति के दौर में वह पहचान मिर्जापुर सीरीज जैसे प्रयासों के पीछे कहीं छुपती जा रही है। भारत राष्ट्र की अस्मिता की पहचान है अशोक चिन्ह। अशोक महान ने इसे जिस लाल पत्थर पर खुदवाया, वह सिर्फ मिर्जापुर में ही मिलता है। बौद्ध स्तूप हों या बौद्ध धर्म के अन्य प्रतीक, ज्यादातर मिर्जापुरी लाल पत्थर पर ही गढ़े गए हैं। सिर्फ देवकीनंदन खत्री ही नहीं, हिंदी साहित्य के कई अन्य दिग्गजों की जन्मभूमि मिर्जापुर है। हिंदी साहित्य के भारतेंदु युग के महत्वपूर्ण निबंधकार रहे बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'। उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध में उन्होंने मिर्जापुर से ही 'आनंद कादंबिनी' नामक पत्रिका निकाली। हिंदी के प्रसार में ताजिंदगी जुटे रहे प्रेमघन ने निबंध और प्रबंध काव्य की कई अनमोल रचनाएं दी हैं। हिंदी के आदि आलोचक रामचंद्र शुक्ल पर भी मिर्जापुरी माटी का कर्ज रहा। उनके पिता मिर्जापुर में तैनात थे, लिहाजा उनके शुरूआती जीवन का बड़ा हिस्सा यहीं गुजरा, प्रारंभिक शिक्षा–दीक्षा भी यहीं हुई और यहीं से उनकी रचनात्मकता के अंकुर फूटे। हिंदी की पहली कहानी कौन है, इस पर एक राय नहीं है। लेकिन जिन कहानियों को पहली कहानी की सूची में हिंदी के आलोचक शामिल करते हैं, उनमें से एक कहानी है, 'दुलाईवाली'। यह कहानी 1907 में प्रकाशित हुई थी। इस कहानी की ना सिर्फ रचनाभूमि मिर्जापुर है, बल्कि इसकी रचनाकार भी मिर्जापुर की ही वासी रहीं। राजेंद्र बाला घोष ने इस कहानी को लिखा था। जो बंग महिला के नाम से तब रचनारत थीं।

ओटीटी प्लेटफॉर्म द्वारा रची गई छवि से इतर मिर्जापुर की अपनी अलग पहचान है। मिर्जापुर में ही मां विंध्यवासिनी देवी का स्थान है। महात्रिकोण पर उनका मंदिर है। महात्रिकोण की यात्रा के बिना विंध्यवासिनी देवी की परिक्रमा पूरी नहीं मानी जाती। पहले संकट मोचन मंदिर में मत्था नवाने की परंपरा है। फिर काली खोह की यात्रा होती है। इसके बाद अष्टभुजी मंदिर का दर्शन और आखिर में विंध्याचल देवी दर्शन से यह तीर्थ पूरा होता है। मान्यता है कि भगवान राम ने यहीं पर अपने पिता दशरथ का श्राद्ध किया था। जहां उन्होंने शिव लिंग की स्थापना की, जो वाराणसी शहर से दक्षिण–पश्चिम में स्थित है। इस मंदिर को रामेश्वर और इलाके को अब शिवपुर के नाम से जाना जाता है।

उत्तर प्रदेश के जिले मिर्जापुर की तहसील है चुनार। यहां का किला मशहूर है। जिसे गढ़ कुंडार के नाम से भी जाना जाता है। चुनार के किले की ही पृष्ठभूमि में चंद्रकांता के दस खंडों और चंद्रकांता संतति की रचना देवकीनंदन खत्री ने की है।

कभी मुंबइया मसाला फिल्मों के लिए एक खास फॉर्मूला होता था, जिसमें सौंदर्य होता था, सेक्स की छौंक होती थी और कुछ मारधाड़ के नजारे होते थे। आज के ओटीटी प्लेटफॉर्मों पर सफलता के लिए कुछ उसी अंजदाज में मसालेबाजी में व्यवसायिक सफलता की सीढ़ी तलाश रहे हैं। इसी चलन में मिर्जापुर सीरीज भी उभर कर सामने आई है। मिर्जापुर में सिर्फ मिर्जापुर का नाम ही है, बल्कि मिर्जापुर की ना तो आत्मा है और ना उसका स्थूल रूप। उसकी बुनियादी पहचान गायब है। ऐसे में मिर्जापुर निवासी क्षुब्ध ना हों तो ही आश्चर्य होगा।

कांवड़ यात्रा मार्ग पर लगे राहुल गांधी के पोस्टर, लिखा- मोहब्बत की दुकान, नंबर- हिंदू मुसलमान

कांवड़ यात्रा मार्ग पर दुकानों पर नाम और पहचान लिखे जाने के योगी सरकार के फैसले के खिलाफ कांग्रेसियों ने दुकानों पर पोस्टर चस्पा कर दिया है। जिस पर लिखा है मोहब्बात की दुकान नंबर हिंदू– मुसलमान। पोस्टर पर लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी का फोटो भी लगा है।

प्रयागराज। योगी सरकार द्वारा कांवड़ यात्रा मार्ग पर दुकान पर नाम और पहचान लिखे जाने का विरोध करते हुए कांग्रेसियों ने जगह–जगह मोहब्बत की दुकान का पोस्टर चिपका दिया है। पोस्टर में लिखा है मोहब्बत की दुकान नंबर हिंदू मुसलमान। पोस्टर में लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी की फोटो लगी हुई है। कांग्रेस नेता इरशाद उल्ला व अब्दुल कलाम आजाद ने कहा कि उत्तर प्रदेश सरकार का यह फैसला अलोकतांत्रिक और असंवैधानिक है। यह देश के गंगा जमुनी तहजीब की संस्कृति के खिलाफ है। देश में मोहब्बत भाईचारा एकता की बात होनी चाहिए न कि हिंदू और मुसलमान को अलग करने की बात करनी चाहिए। उत्तर प्रदेश सरकार का यह आदेश देश को बांटने का कार्य कर रहा है। यह गलत है। यह अध्यादेश वापस होना चाहिए। मुस्लिम भाई कावड़ियों के यात्रा में फूलों की वर्षा करते हैं। पानी शरबत लंगर करके उनका स्वागत करते हैं।

खेत की जुताई के दौरान रोटावेटर में फंसने से मासूम की मौत, परिवार में मचा कोहराम

प्रयागराज। करछना थाना क्षेत्र के रोकड़ी गांव शनिवार को सुबह दर्दनाक हादसा हो गया। खेत की जुताई के दौरान ट्रैक्टर पर बैठे मासूम की रोटावेटर में फंसने से मौत हो गई। घटना से परिवार में कोहराम मच गया। परिजनों ने पुलिस को सूचना दिए बगैर शव का अंतिम संस्कार कर दिया। रोकड़ी गांव निवासी बिरहा पटेल का छोटा बेटा लालू पटेल (5) खेत की जुताई के दौरान ट्रैक्टर पर बैठा था। ऊबड़ खाबड़ जमीन पर ट्रैक्टर चलने के दौरान वह छिटककर नीचे गिर गया। जब तक ट्रैक्टर चालक की नजर उस पर पड़ती तब तक रोटावेटर में फंसकर उसकी मौत हो गई। आंख के सामने मासूम की मौत देखकर परिवार के लोग बदहवास हो गए। मौके पर ग्रामीणों की भारी भीड़ जुट गई। परिवार के लोगों ने बिना देर किए शव का अंतिम संस्कार स्थानीय गंगा घाट पर कर दिया।

ग्राम पंचायत सचिव पर प्रधानमन्त्री आवास की मजदूरी हड़पने का आरोप।

(लाभार्थी महिला ने जनसुनवाई पोर्टल पर दर्ज कराई शिकायत) कार्यवाही की मांग

अवध की आवाज ब्यूरो
श्री प्रकाश गुप्ता

सीतापुर। सीतापुर मिश्रिख भ्रष्टाचार के मामले में मिश्रित ब्लाक की ग्राम पंचायत जसरथपुर अखबारों के साथ ही सोशल मीडिया पर पहले से ही अपनी जगह बनाये हुये थी बीते महीने ही इस ग्रामपंचायत में इन्टर लॉकिंग और नाली निर्माण घोटाला सुर्खियों में रहा था जिस पर प्रधान और सचिव ने एक गांव में काफी समय से अपूर्ण पड़े कार्य को पूरा करा दिया था,लेकिन प्रधान और सचिव के भ्रष्टाचार का सिलसिला रुकने का नाम ही नहीं ले रहा है ग्राम पंचायत के एक माजरा फुलवारी निवासिनी दलित विमला देवी पत्नी सरवन ने जनपद के जिलाधिकारी और अध्यक्ष लोकपाल के साथ ही मुख्यमंत्री को जन सुनवाई पोर्टल के माध्यम से शिकायत सन्दर्भ संख्या 40015424045152 दर्ज कराकर ग्राम प्रधान और पंचायत सचिव पर भ्रस्टाचार का गम्भीर आरोप लगाते हुये रिपोर्ट दर्ज कराकर कार्यवाही किये जाने की जहां मांग की है वहीं शिकायतकर्ता ने अपनी ही तरह कई अन्य आवास लाभार्थियों की भी मजदूरी राशि प्रधान और पंचायत सचिव पर हड़पने गम्भीर आरोप लगाया है। आवास लाभार्थी पीड़िता का आरोप है कि शासन की योजना के तहत उसे प्रधानमंत्री आवास मिला था जिसकी मजदूरी का 3220/– रु० सचिव धीरेंद्र ने अपने चहेते किसी गोविंद नामक व्यक्ति के खाते में

भेज कर निकाल लिया है, इतना ही नहीं महिला का यह भी आरोप है कि उक्त गोविंद की जॉब कार्ड संख्या 1000 पर गांव के अन्य चार व्यक्तियों की भी मजदूरी धनराशि भेज कर आपस में बन्दर बाँट कर ली गई है। क्षेत्र में आम चर्चा है कि उक्त सचिव द्वारा अपने भाई की फर्म नन्दवन्शी ट्रेडर्स एण्ड सप्लायर के खाते में भेज कर सरकारी धनराशि हड़पी जा रही है। आरोप यह भी है कि तमाम कार्य तो मौके पर करायें ही नहीं जाते फिर कागजी कार्य दिखा कर धन हड़पो अभियान चलाया जा रहा है । जानकार सूत्र बताते हैं कि ग्राम पंचायत जसरथपुर में विकास कार्य कराने के नाम पर 12 लाख 34000/– रुपया नन्दवन्शी ट्रेडर्स नामक फर्म पर भेज कर हड़प किया जा चुका है।शिकायत कर्तिनी महिला ने मुख्य सचिव उत्तर प्रदेश के साथ ही जिलाधिकारी और अध्यक्ष लोकपाल तथा मुख्यमन्त्री जन सुनवाई पोर्टल पर शिकायती दर्ज कराकर आरोपियों पर प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज कराकर कार्यवाही किये जाने की मांग की है।

वृक्षारोपण वह प्रक्रिया है जिसमें वर्षो के पौधों को भूमि सुधार या भू निर्माण उद्देश्यों के लिए रोपित किया जाता है।

वृक्षारोपण बहुत आवश्यक है क्योंकि पेड़ पर्यावरण को आक्सीजन प्रदान करते हैं और हवा की गुणवत्ता को बेहतर बनाते हैं यदि अधिक पेड़ लगाए जाए तो दुनिया का पर्यावरण रहने के लिए एक सुरक्षित स्थान बन जाएगा। वृक्षारोपण प्रदूषण को भी काम करता है जिससे आने वाली पीढ़ियां का जीवन सुरक्षित होता है। पेड़ लगाना हमारे जीवन के लिए बहुत अधिक आवश्यक है। इसमें विद्यार्थियों की भी अहम भूमिका होती है। पेड़ हमें स्वच्छ हवा लकड़ी फल ईंधन इमारती लकड़ी और रहने के लिए जगह जैसी महत्वपूर्ण चीजें देते हैं। इनके औषधीय और आध्यात्मिक उपयोग भी है। इन सभी लाभों के लिए हमें बहुत सारे पेड़ो की आवश्यकता है। दुर्भाग्य से आजकल व्यवसायों के लिए आधिकाधिक वनों को काटा जा रहा है, जिसे बनों की कटाई कहा जाता है। इसलिए हमारे लिए यह महत्वपूर्ण है कि हम अधिक से अधिक पेड़ लगाना शुरू करें पेड़ लगाने से योजना बनाना बी या पौधे जमीन में डालना उन्हें पानी देना और उनकी देखभाल करना शामिल है। वायु प्रदूषण ग्लोबल वार्मिंग और मानवीय कार्यों के कारण होने वाले जलवायु परिवर्तन जैसी चीजों के कारण हम गंभीर समस्याओं का सामना कर रहे हैं। यही कारण है कि पेड़ लगाना इतना महत्वपूर्ण है।

पत्रकार गुड्डू मिश्रा

यूपी विधानसभा उपचुनाव को लेकर बड़ी खबर, सपा–कांग्रेस में सीट शेयरिंग पर चर्चा नहीं

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में जल्दी ही 10 विधानसभा सीटों के लिए उपचुनाव होने वाले हैं। जिसको लेकर सभी सत्ताधारी पार्टियों ने कमर कस ली है और तैयारियां भी शुरु कर दी हैं। इस बीच सूत्रों के हवाले से एक बड़ी खबर सामने आ रही है कि यूपी उपचुनाव में सपा–कांग्रेस में सीट शेयरिंग पर कोई भी चर्चा नहीं हुई है। समाजवादी पार्टी कांग्रेस को सिर्फ एक सीट देने के लिए राजी है। समाजवादी पार्टी कांग्रेस को गाजियाबाद सीट दे सकती है। कांग्रेस ने समाजवादी पार्टी से 4 सीटों की डिमांड की थी जिनमें फूलपुर,मझवां, कुंदरकी, मीरापुर सीट शामिल है। उत्तर प्रदेश की जिन 10 सीटों पर उपचुनाव होना है उसमें से सपा जिन 8 सीटों पर चुनाव लड़ सकती है उसमें कटेहरी (अंबेडकरनगर), करहल (मैनपुरी), मिल्कीपुर (अयोध्या), मीरापुर (मुजफ्फरनगर), मझवां (मिर्जापुर), सीसामऊ (कानपुर नगर), खैर (अलीगढ़) और कुंदरकी (मुरादाबाद) सीट है। आपको बता दें कि उत्तर की 10 विधानसभा सीटों– करहल, मिल्कीपुर, कटेहरी, कुंदरकी, गाजियाबाद, खैर मीरापुर, फूलपुर, मझवा और सीसामऊ पर उपचुनाव होना है। इन सीटों में 5 समाजवादी पार्टी का कब्जा है। आरएलडी और निषाद पार्टी की 1–1 सीट हैं जबकि भारतीय जनता पार्टी की 3 सीटें हैं।

'एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत यूपी टिम्बर एसोसिएशन ने किया पौधा रोपण'

'प्रदेश के हर जिले में टिम्बर व्यापारियों ने किया पौधा रोपण'

लखनऊ। उत्तर प्रदेश टिम्बर एसोसिएशन ने प्रधानमंत्री,मुख्यमंत्री व वन मंत्री की अपील पर संपूर्ण उत्तर प्रदेश में दर्जनों जिलों में पौधा रोपण अभियान चलाया। प्रदेश अध्यक्ष मोहनीश त्रिवेदी ने बताया कि संगठन से जुड़े तमाम टिम्बर व्यापारियों द्वारा अपने अपने जिले में मिला कर सम्पूर्ण प्रदेश में तकरीबन 1100 पौधे लगाए गए इसी कड़ी में आज संगठन के प्रदेश कार्यालय ऐशबाग के पास स्थित पार्क में नगर निगम लखनऊ के उपाध्यक्ष व बशीरतगंज वार्ड के पार्षद गिरीश गुप्ता जी व ऐशबाग वार्ड के पूर्व पार्षद साकेत शर्मा जी द्वारा पौधा रोपण किया गया इस मौके पर उत्तर प्रदेश टिम्बर एसोसिएशन के प्रदेश अध्यक्ष मोहनीश त्रिवेदी,विधिक सलाहकार अशीष त्रिवेदी, संरक्षक अख्तर खान, सौरभ गुप्ता, रूप कुमार,धीरज त्रिवेदी,एजाज खान,वसीम अहमद,अंशुल त्रिवेदी,विवेक पांडे सहित बड़ी संख्या में टिम्बर व्यापारी और क्षेत्रीय लोग उपस्थित रहें। मोहनीश त्रिवेदी ने बताया कि उत्तर प्रदेश टिम्बर एसोसिएशन से जुड़े लखनऊ सहित मेरठ,अमरोहा, अयोध्या, उन्नाव, सुल्तानपुर, अंबेडकरनगर, हरदोई, गाजीपुर, बाराबंकी, मुरादाबाद, बिजनौर, रामपुर, सीतापुर, लखीमपुर, कुशीनगर सहित दर्जनों जिलों के पुश्तैनी टिंबर व्यापारियों ने पौधा रोपण अभियान में हिस्सा लिया।

तेज रफ्तार बाइक अनियंत्रित होकर पुलिया से टकराई,हादसे में एक युवक की मौत, दो घायल

उरई/जालौन। जालौन में बाइक अनियंत्रित होकर पुलिया से टकरा गई। शराब के नशे में धुत तीन बाइक सवार युवक घायल हो गए। जिसमें एक 15 वर्षीय किशोर की मौत हो गई। हादसे के बाद सभी को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया। जिसमें चिकित्सकों ने एक को मृत घोषित कर दिया। जबकि दो की हालत नाजुक होने के कारण हायर सेंटर रेफर कर दिया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। घटना रामपुरा थाना क्षेत्र के जगम्मनपुर जुहीखा पुल के हिम्मतपुर मोड़ की है। हमीरपुरा जगम्मनपुर के रहने वाले तीन दोस्त अंकित, मोहित, करन शराब के नशे में धुत होकर बाइक से यमुना नदी के पार जुहीखा गए थे। जहां से यह सभी लौट रहे थे। उसी समय कर्णदेवी मंदिर के प्रवेश द्वार के पास सड़क के किनारे अनियंत्रित होकर उनकी बाइक पुलिया से टकरा गए। जिससे अंकित (15) पुत्र प्रतिभान की मौत हो गई। मोहित (20) पुत्र राम अवतार, करन (21) पुत्र बाबू कारीगर निवासी हमीरपुरा गंभीर रूप से घायल हो गए। मृतक अंकित अपने माता–पिता के तीन पुत्रों में सबसे बड़ा था। घटना की सूचना पाकर रामपुरा थाना पुलिस मौके पर पहुंचकर घायलों को सीएचसी में भेजा। गंभीर हालत होने पर उन्हें मेडिकल कॉलेज उरई रेफर कर दिया गया। मृतक अंकित के शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया।

यूपी एसटीएफ ने 3 आरोपियों को पकड़ा, टेलीग्राम पर टास्क देकर पैसा दो गुना करने का देते थे झांसा.... कर चुके हैं 8 करोड़ की ठगी

लखनऊ। उत्तर प्रदेश की एसटीएफ के हाथ एक बड़ी सफलता लगी है। यूपी एसटीएफ ने एक ऐसे गिरोह को पकड़ा है जो टेलीग्राम के माध्यम से लोगों को टास्क देता था और फिर उसे पूरा करने के लिए दोगुने रुपए देने का लालच देकर ठगी करता था। गिरोह के शातिर लोग कमीशन पर अलग–अलग बैंक के खातों का संचालन कर रुपयों को यूएसडीटी में अलग–अलग ऐप के माध्यम से कन्वर्ट कर लेता था और बाद में इन रुपयों को अपने वॉलेट में ट्रांसफर कर लेता था। सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक, यूपी एसटीएफ को कई दिनों से इस बारे में शिकायतें मिल रही थीं कि कुछ लोग सोशल मीडिया के माध्यम से मैसेज भेजकर टॉस्क देते हैं और बदले में रुपए दोगुने का लालच देते हैं। जब इस मामले में एसटीएफ ने जांच शुरु की तो पता चला कि 3 आरोपियों के खिलाफ दिसंबर 2023 में लखनऊ के साइबर थाने में 9 लाख की ठगी का मामला दर्ज है। पुलिस ने तीनों को गिरफ्तार कर लिया और पूछताछ की। अधिकारियों ने बताया कि ये आरोपी सोशल मीडिया के माध्यम से लोगों को मैसेज भेजते थे। मैसेज भेजकर एक टास्क पूरा करने की शर्त रखी जाती थी, फिर उसे पूरा करने पर लगाई गई रकम को दोगुने करने का लालच दिया जाता था। इतना सब होने के बाद जो भी इनके जाल में फंस जाता था, उसका ऑनलाइन अकाउंट हहपदउ.बवउ पर खुलवाया जाता था। यह शातिर लोग फिर इसी अकाउंट में लोगों से पैसा डलवाते थे। पहले जो रकम आती थी, उसे दोगुना करके डाल देते थे और बाद में बड़ी रकम आते ही खातों से सारे रुपए निकाल लेते थे। उत्तर प्रदेश एसटीएफ ने बताया कि इस गैंग के लोग जिन बैंक खातों का इस्तेमाल करते थे, वह सब जरुरतमंद लोगों के होते थे, जिन्हें रुपयों का लालच देकर उनके नाम से खोला जाता था। गिरफ्तार आरोपियों ने लगभग 200 से ज्यादा बैंक खाते लोगों को कमीशन के नाम पर खुलवाए थे, जिनमें ठगी की रकम डाली जाती थी। इस तरह आरोपियों ने भोले भाले लोगों को पैसे दोगुने करने का लालच देकर 8 करोड़ की ठगी की है। गिरफ्तार आरोपी प्रकाश नवल ने पुलिस पूछताछ में बताया कि उसने साल 2014 में आईटीआई किया। उसके बाद 2016 से 2020 तक बैंकों में क्रेडिट कार्ड डिपार्टमेंट में भी काम किया था। जिसके बाद वह 2020 से 2023 तक जयपुर में कार्यरत रहा। आरोपी ने पूछताछ में आगे बताया कि सितंबर 2023 में उसके टेलीग्राम पर एक मैसेज आया कि आपको यूपीआई पेमेंट का मल्टीनेशनल कंपनी में कलेक्शन मैनेजर के पद पर जॉब का ऑफर है, यदि काम करना चाहते हैं तो कर सकते हैं। कंपनी क्रिप्टो में इन्वेस्ट करती है। आपके बैंक खाते में रुपये भेजे जाएंगे, जिसमें आप 12 प्रतिशत कमीशन काटकर ज्ज्म्त न्ैक्ज में कन्वर्ट करके कंपनी के वॉलेट में ट्रांसफर करना होगा। आप जितने भी बैंक खाते उपलब्ध कराएंगे, उनमें प्रतिदिन 1 से 2 लाख रुपये आएंगे। जिसके बाद आरोपी ने अपने चचेरे भाई से इस बारे में बातचीत की और कहा कि अगर हम किराए के कुछ खाते मैनेज कर लें तो अच्छा फायदा हो सकता है। आरोपी की बात सुनकर उसका चचेरा भाई मोंटू इस काम के लिए तैयार हो गया। दोनों ने किराए का बैंक खाता लेकर काम करना शुरू कर दिया। ज्ज्म्त न्ैक्ज कन्वर्ट करने का काम कैलाश चंद्र सुखेरिया द्वारा किया जाने लगा। यूपी एसटीएफ की पूछताछ में आरोपी ने बताया कि वह पैसे मंगवाने के लिए जिन बैंक खातों का इस्तेमाल करते थे वे 4–5 दिनों में ब्लॉक हो जाते थे। हम लोग किराए के विभिन्न बैंक खाते प्रयोग करते थे। ऐसा करके हम लोगों ने 200 बैंक खाते किराए पर लिए, जिनमें अब तक विभिन्न चरणों में लगभग 7 से 8 करोड़ रुपये आए हैं, जिनको हम तीनों मिलकर अपना कमीशन काटकर ज्मजीमत USDT कन्वर्ट कर कंपनी के वॉलेट में ट्रांसफर कर दिए। अब गिरफ्तार किए गए आरोपियों के द्वारा बताए गए बैंक खाते, वॉलेट व टेलीग्राम अकाउंट की जानकारी ली जा रही है। वहीं यूपी एसटीएफ इस गिरोह के अन्य सदस्यों की गिरफ्तारी के लिए काम कर रही है।

पांच बच्चों की मां प्रेमी संग फरार,पति ने गुस्से में आकर घर में लगाई आग,

पुलिस ने बुजुर्ग मां और बच्चों को सुरक्षित बाहर निकाला

बांदा। बांदा से हैरान कर देने वाला मामला सामने आया है। यहां एक व्यक्ति की पत्नी अपने 5 बच्चों को छोड़कर प्रेमी संग फरार हो गई। इसके बाद गुस्साए पति ने घर को आग के हवाले कर दिया। देखते ही देखते आग ने विकराल रूप ले लिया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने कड़ी मशक्कत के बाद आग बुझाई और घर में मौजूद बच्चों का रेस्क्यू किया। यह मामला नरैनी कोतवाली क्षेत्र के करतल चौकी क्षेत्र का है। यहां रहने वाले लल्लू के घर में अचानक देर रात 2 बजे आग लग गई। लोगों ने पुलिस को सूचना दी तो पीड़ित ने सब कुछ जल जाने का हवाला देकर मौके पर न आने को कहा। पुलिस फिर भी मौके पर पहुंची और जायजा लिया। पुलिस का कहना है कि मौके पर देखा तो कच्चे मकान में आग धू–धू कर जल रही थी। कोई भी आग नहीं बुझा रहा था। लल्लू के पांचों बच्चे और बुजुर्ग मां घर में मौजूद थे। जिन्हें सुरक्षित निकाला गया। आसपास के लोगों से पूछा तो मौके पर किसी के न आने की बात बताई गई। पीड़ित से पूछा तो उसने बताया कि मेरी पत्नी को पड़ोसी गांव का एक सख्स साथ ले गया है। उसी पर आग लगाने का आरोप लगाया। इसके बाद पुलिस ने बारीकी से जांच पड़ताल की। पता चला कि पीड़ित घर में आग लगने के बावजूद आग नहीं बुझा रहा था। वह आराम से चारपाई पर लेटा था। आग न बुझाने का कारण पूछा तो उसने कहा पानी नहीं है, जबकि पुलिस ने पास में बने गड्ढों से पानी लेकर आग बुझाई। पत्नी के भाग जाने के बाद गुस्से में आकर इसी ने हरकत की है। पुलिस ने उसको राशन आदि देकर आगे की जांच शुरू कर दी है। चौकी इंचार्ज रोशन कुमार गुप्ता ने बताया कि देर रात करीब दो बजे सूचना मिली थी कि ग्राम दाई की बगिया में सड़क के किनारे स्थित घर में आग लग गई है। सूचना पर तत्काल फायर ब्रिगेड को सूचना देकर मौके पर पहुंचे। ग्रामीणों की मदद से आग पर काबू पाया गया। घर में रहने वाले सभी सुरक्षित हैं। जांच में पता चला कि किसी ने आग नहीं लगाई है, इसकी पत्नी किसी के साथ लापता है, उसी पर आरोप लगाए हैं। लेकिन लोगों ने बताया कि मौके पर कोई नहीं था, जिसके साथ पत्नी गई, वो कहीं बाहर का है। इसी के द्वारा आग लगाने की बात सामने आ रही है। इसने हमें और फायर टीम को आग लगने के दौरान मौके पर आने से मना किया था। वह खुद चारपाई पर आराम कर रहा था। वहीं आग जल रही थी। इसने शिकायती पत्र दिया है, जांच की जा रही है।

समय से पहले रिहा होंगे बीजेपी के पूर्व विधायक करवरिया

हत्या के जुर्म में काट रहे थे सजा

लखनऊ। हत्या के मामले में आजीवन कारावास की सजा काट रहे भाजपा के पूर्व विधायक उदयभान करवरिया की समय से पहले रिहाई होगी। कारागार विभाग ने शासनादेश जारी कर दिया है। केंद्रीय कारागार नैनी में सजा काट रहे करवरिया का जल्द सलाखों से बाहर आने का रास्ता साफ हो गया है।प्रयागराज में 1996 में सपा के पूर्व विधायक जवाहर पंडित की हत्या के मामले में उदयभान करवरिया व अन्य के विरुद्ध मुकदमा दर्ज हुआ था। चार नवंबर 2019 को आजीवन कारावास की सजा हुई थी। प्रयागराज के डीएम व एसएसपी ने पूर्व विधायक करवरिया की समयपूर्व रिहाई की संस्तुति की थी। जेल में अच्छे आचरण व दया याचिका समिति की संस्तुति के आधार पर समयपूर्व रिहाई का निर्णय लिया गया है। आदेश में कहा गया है कि यदि बंदी को किसी अन्य वाद में निरुद्ध न रखा जाना हो तो उसे शेष दंड की अवधि में शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए एसएसपी व डीएम प्रयागराज के समक्ष दो जमानतें तथा उतनी ही राशि का निजी मुचलका प्रस्तुत करने पर बंदी को कारागार से मुक्त कर दिया जाए। पूर्व में करवरिया के विरुद्ध दर्ज मुकदमे को वापस लेने की पहल हुई थी, लेकिन हाईकोर्ट ने खारिज कर दिया था।भाजपा के पूर्व विधायक उदयभान करवरिया की रिहाई से राजनीतिक समीकरण बदलेंगे। उनकी पहचान ब्राह्मण चेहरे के रूप में होती है। भाजपा 2027 के विधानसभा चुनाव में उसका फायदा उठाना चाहेगी। भाजपा से राजनीति की शुरुआत करने वाले उदयभान पहले प्रयास में सफल हो गए थे।वरिष्ठ नेता डा. मुरली मनोहर जोशी के संरक्षण में राजनीतिक सफर में आगे बढ़ते रहे। 2002 के चुनाव में उन्हें बारा विधानसभा का संयोजक बनाकर भेजा गया। चुनाव घोषित हुए उन्हें पार्टी का अधिकृत प्रत्याशी बना दिया गया। उन्होंने बसपा उम्मीदवार को मात दी।उसके बाद 2007 में फिर पार्टी ने विश्वास जताया और उम्मीदवार बनाया। दोबारा सफलता मिली। इसके बाद बारा विधानसभा सीट सुरक्षित घोषित हो गई। इसकी वजह से पार्टी ने उन्हें 2012 में शहर उत्तरी से उम्मीदवार बनाया। इस बार हार का सामना करना पड़ा। उनके प्रतिद्वंद्वी अनुग्रह नारायण सिंह सफल हुए थे। 13 अगस्त1996 को सिविल लाइंस में सपा के पूर्व विधायक जवाहर यादव उर्फ जवाहर पंडित की दिनदहाड़े गोलियों से छलनी कर दिया गया था। पहली बार ऐसा हुआ था, जब इलाहाबाद में एके–47 तड़तड़ाई थी। आरोप करवरिया बंधुओं पर लगा। मामले में कपिलमुनि करवरिया, उनके भाई उदयभान करवरिया, सूरजभान करवरिया व उनके रिश्तेदार रामचंद्र उर्फ कल्लू नामजद हुए, लेकिन राजनीति में तीनों भाइयों का रसूख बढ़ता गया।कपिलमुनि से बसपा सांसद, उदयभान भाजपा से विधायक व सूरजभान बसपा से एमएलसी बने। स्थिति वर्ष 2014 में पलटी। उदयभान ने वर्ष 2014 में न्यायालय में तब आत्मसमर्पण किया था, जब उनके खिलाफ वारंट जारी हो गया था।अदालत ने चार नवंबर 2019 को तीनों भाइयों सहित चार को आजीवन कारावास की सजा सुनाई थी। करवरिया परिवार और पूर्व विधायक जवाहर यादव उर्फ जवाहर पंडित के बीच बालू के ठेकों पर वर्चस्व को लेकर अदावत शुरू हुई थी। वहीं विधायक व जवाहर पंडित की पत्नी विजमा यादव का कहना है कि उदयभान करवरिया की हुई रिहाई को न्यायालय में चुनौती दूंगी।

बिजली कटौती का ग्रामीणों ने किया विरोध, डीएम ऑफिस के बाहर किया प्रदर्शन

उरई/जालौन। जालौन में बिजली कटौती के विरोध में एक दर्जन से अधिक गांव के किसानों और ग्रामीणों ने उरई कलेक्ट्रेट में डीएम कार्यालय के बाहर प्रदर्शन किया। साथ ही बिजली विभाग के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। इस प्रदर्शन को देखते हुए कलेक्ट्रेट में मौजूद अधिकारी मौके पर पहुंचे। जिन्होंने किसानों की समस्याओं को सुनते हुए जल्द से जल्द निराकरण करने की बात कही। इस दौरान किसानों ने ज्ञापन भी दिया। शनिवार को उरई और कोंच तहसील के अंतर्गत आने वाले ग्राम जखोली, हरदुआ, केलरा, घुमावली, जमरोही खुर्द, धुरट, सौजना, सला, पिरौना, ईंगुई, परैछा, सहित अन्य गांव के रहने वाले किसान राहुल, देवेंद्र, नरेंद्र, राजेश, जय सिंह, कपिल, बृजपाल, दीनदयाल, धीरेंद्र, जगत सिंह सहित दर्जनों किसान उरई के कलेक्ट्रेट पहुंचे। जहां उन्होंने जिलाधिकारी कार्यालय कक्ष के बाहर बिजली विभाग के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। किसानों का आरोप है कि बीते दो महीने से इस ग्रामीण इलाकों में बिजली की लगातार कटौती की जा रही है। जिस कारण किसान परेशान है। इतना ही नहीं खरीफ की फसलों को भी भारी नुकसान हो रहा है। वह धान की खेती में पानी नहीं लग पा रहे हैं। जिस कारण उनके फसल सूख रही है। कई बार बिजली विभाग के अधिकारियों को इस बारे में अवगत कराया। मगर किसी भी अधिकारी द्वारा इसका संज्ञान नहीं लिया जा रहा है।अधिकारी कहीं फाल्ट का बहाना तो कहीं तार टूटने की बात कहते हैं। शिकायत करने के बावजूद भी इसका समाधान नहीं किया जा रहा है। जिस कारण उन्हें मजबूरी में जिलाधिकारी कार्यालय के बाहर प्रदर्शन करना पड़ रहा है। वहीं किसानों की इस प्रदर्शन को देखते हुए कलेक्ट्रेट में मौजूद अधिकारी मौके पर पहुंचे। जिन्होंने किसानों की समस्या सुनते हुए जल्द से जल्द समाधान करने की बात कही। वहीं किसानों ने जिलाधिकारी के नाम ज्ञापन दिया है, जिससे उनकी इस समस्या का निराकरण हो सके।

अवध की आवाज ब्यूरो

स्वच्छ व सुंदर पर्यावरण के लिए हिलौली ब्लाक परिसर में वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जहाँ विभिन्न प्रजाति के पौधे रोपित किए गए। ब्लाक प्रमुख दिलीप कुमार दीक्षित ने कहा कि अगर सभी लोग एक एक पौधे लगाकर उसकी संरक्षण का प्रण ले तो देश में कही भी पर्यावरण का खतरा उत्पन्न नहीं होगा। उन्होंने कहा कि ऑटोमोबाइल द्वारा जो भी प्रदूषण पैदा हो रहा है उससे बचाव के लिए अधिक से अधिक पौधारोपण जरूरी है। उन्होंने मौजूद सभी लोगो को पौधे लगाने के लिए प्रेरित किया। इस अवसर पर अधिकारी व कर्मचारीगण मौजूद रहे।

पुलिस थानों में अब नहीं होंगे गवाहों के इलेक्ट्रॉनिक साक्ष्य

बांदा। भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता की धारा 265, 266 व 308 में गवाहों के परीक्षण के लिए इलेक्ट्रानिक साक्ष्य पुलिस नियंत्रण वाले नामित पुलिस स्टेशन, कंट्रोल स्थल व पुलिस आफिस में नहीं होंगे। पहले नए कानूनों में इन ध ाराओं में इलेक्ट्रानिक साक्ष्य लेने की व्यवस्था पुलिस नियंत्रण वाले स्थानों पर की गई थी, जिसका वकील कड़ा विरोध कर रहे थे। नए तीन कानूनों में खामियों को लेकर बांदा बार संघ ने प्रबल विरोध ा किया था। यहां से उपजी चिंगारी पूरे देश में फैली। बार कौंसिल ऑफ इंडिया ने इसे संज्ञान लिया और जिला बार संघ अध्यक्षों से सुझाव लिए। वकीलों की आपत्ति से सरकार को अवगत कराया। अंततरू सरकार ने दो पांव पीछे हटाते हुए वकीलों के दर्द को समझा और आदेश जारी किए कि भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता की धारा 265, 266 व 308 में गवाहों के परीक्षण के लिए इलेक्ट्रानिक साक्ष्य पुलिस नियंत्रण वाले नामित पुलिस स्टेशन, कंट्रोल स्थल व पुलिस आफिस में नहीं होंगे। पहले भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता को लेकर केंद्र सरकार द्वारा 13 जून 2024 को जारी नोटिफिकेशन में पुलिस नियंत्रण वाले नामित पुलिस स्टेशन, कंट्रोल स्थल, पुलिस आफिस में गवाहों के परीक्षण के लिए आडियो, वीडियो व इलेक्ट्रानिक साक्ष्य लेने की व्यवस्था की गई थी। केंद्र सरकार ने अब इस व्यवस्था को खत्म कर संशोधित आदेश जारी कर दिया है। इस आशय का आदेश 15 जुलाई को केंद्रीय गृह सचिव अजय भल्ला (आईएएस) ने प्रदेश के सभी प्रमुख सचिवों को भेजा है। जिला अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष अशोक दीक्षित ने कहा कि यह बांदा बार संघ की बड़ी जीत है। अब नए आदेशों में उपरोक्त धाराओं के प्रयोजनों के लिए पुलिस स्टेशनों या पुलिस विभाग के नियंत्रण वाले स्थान को ऑडियो, वीडियो व इलेक्ट्रानिक साक्ष्य गवाही के लिए निहित नहीं किया जाएगा। वहीं स्थान इसके लिए निहित होगा जो पुलिस नियंत्रण से बाहर है। इससे पुलिस प्रभाव से मुक्त गवाहों के स्वतंत्र साक्ष्य लिए जा सकेंगे। लोगों को निष्पक्ष न्याय मिल सकेगा। अब साक्ष्यों में पुलिस की मनमानी नहीं चल सकेगी। इलेक्ट्रानिक साक्ष्य का मतलब है कि इलेक्ट्रानिक संयंत्रों के प्रयोग से सूचना को एकत्र करना। जो सुनाई दे और द्रष्टिवान भी हों। जैसे कि वीडियो कांफ्रेंसिंग, आडियो और वीडियो के जरिए गवाही होना।

महिला ने 4 बच्चों को दिया जन्म, चारों की मौत,

परिवार ने एंबुलेंस सेवा को ठहराया जिम्मेदार, सीएमओ ने दिए जांच के आदेश

उरई/जालौन। जालौन में एक गर्भवती महिला ने एक साथ चार नवजात को जन्म दिया है। इन सभी बच्चों को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया। जिनकी हालत नाजुक होने पर उन्हें उरई जिला अस्पताल रेफर किया गया। जहां चारों नवजात ने उरई महिला अस्पताल में दम तोड़ दिया। वही परिजनों ने स्वास्थ्य विभाग की एंबुलेंस सेवा को जिम्मेदार माना है। जिस पर जालौन के मुख्य चिकित्साधिकारी ने जांच के आदेश दिए हैं। यह मामला माधौगढ़ विकासखंड क्षेत्र के गोहन ग्राम का है। यहां के रहने वाले रवि राजपूत की पत्नी श्री देवी को शुक्रवार दोपहर 12 के आसपास प्रसव पीड़ा होने लगी। जिसको देखते हुए परिजनों द्वारा फोन करके एम्बुलेंस को सूचना दी गई। मौके पर पहुंची एंबुलेंस और उसके साथ स्वास्थ्य विभाग के कर्मचारी महिला को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र माधौगढ़ लेकर आ रहे थे। जैसे ही एंबुलेंस गांव कुरसेड़ा के पास पहुंची तभी महिला को प्रसव पीड़ा होने लगी। चालक विकास कुमार, परिचायक मुनेश कुमार ने सास उर्मिला और जेठानी मनोज कुमारी के सहयोग से एंबुलेंस में ही सुरक्षित डिलीवरी कराई। इस दौरान महिला ने एक साथ चार बच्चों को जन्म दिया। जिसमें तीन लड़की और एक लड़का था। एंबुलेंस चालक ने डिलीवरी होने के बाद जच्चा–बच्चा को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र माधौगढ़ में भर्ती कराया। जिसमें डॉक्टर मनीष राजपूत, स्टाफ नर्स रूचि ने बच्चों की हालत कमजोर होने की वजह से सभी नवजात को मां सहित जिला अस्पताल उरई के लिए रेफर कर दिया। मगर एंबुलेंस सही न होने के कारण चारों नवजात की अस्पताल पहुंचने के दौरान ही मौत हो गई। इस दौरान परिजनों ने स्वास्थ्य विभाग की एंबुलेंस को जिम्मेदार माना। परिजनों का आरोप है कि एंबुलेंस सेवा सही समय पर न मिलने के कारण ही यह हालत हुई है। जिस कारण उनके चारों नवजात बच्चों की मौत हुई है। वहीं जालौन मुख्य चिकित्सा अधिकारी एनडी शर्मा द्वारा मामले की जांच के आदेश दिए हैं। उन्होंने कहा कि इस मामले की जांच की जा रही है। जांच में जो भी दोषी पाया जाएगा, उस आधार पर कार्रवाई की जाएगी।

जालौन डीएम राजेश कुमार पांडेय ने मामले में माधौगढ़ के एसडीएम को मौके पर भेजा। सीएमओ नरेंद्र देव शर्मा और माध ौगढ़ के एमओ से इस मामले में रिपोर्ट मांगी है। जिससे यह पूरी घटना की हकीकत सामने आ सके।

दुबई में फंसी युवती को न्याय दिलाने की मांग, कांग्रेस कमेटी के सदस्य बोले, जांच हो

बांदा। बांदा में कांग्रेस कमेटी ने दुबई में फांसी की सजा पाई युवती को न्याय दिलाने को लेकर कलक्ट्रेट में राष्ट्रपति को संबोधित ज्ञापन सौंपा। प्रशासन को ज्ञापन सौंपकर पूरे प्रकरण की न्यायिक जांच कराकर न्याय दिलाने की मांग की है। आपको बता दें की कांग्रेस कमेटी के जिलाध्यक्ष नेतृत्व में कांग्रेसियों ने राष्ट्रपति को संबोधित ज्ञापन जिलाधिकारी को देते हुए बताया कि मटौंध थाना क्षेत्र अंतर्गत गोयरा मुगली निवासी शहजादे खान जो कि रोटी बैंक सोसाइटी की सदस्य भी थी। कुछ साल पहले फेसबुक के माध्यम से अपने साथी के साथ जुड़कर आगरा गई और वहां से दुबई चली गई थी। जहां पर उसे बच्चे की हत्या के आरोप में फांसी की सजा सुनाई गई है। जबकि परिजनों द्वारा थाना मटौंध में आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज कराया गया है। जिसकी सही विवेचना कराकर उचित न्याय दिलाने का प्रयास किया जाए। उन्होंने राष्ट्रपति से अनुरोध किया है कि पूरे मामले की जांच कराकर फांसी की सजा की आरोपी को सकुशल वापसी का प्रयास करने के साथ वास्तविक दोषियों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई सुनिश्चित कराई जाए। इस मौके पर जिला उपाध्यक्ष मो. इदरीश, बी लाल, महासचिव केपी सेन, ब्लाक अध्यक्ष गेंदा प्रसाद यादव, सनी पटेल, असद अल्वी, सहित रोटी बैंक अध्यक्ष रिजवान अली, सुनील सक्सेना आदि उपस्थित रहे।

नवयुग कन्या महाविद्यालय में पौधरोपण

लखनऊ। पर्यावरण का संरक्षण हम सब का दायित्व है–इस उद्देश्य से आज नवयुग कन्या महाविद्यालय, राजेंद्र नगर, लखनऊ की पर्यावरण संरक्षण एवं पुनर्स्थापना समिति द्वारा उच्च शिक्षा विभाग को आवंटित लक्ष्य 22,000 पौधरोपण के लक्ष्य को पूरा करने के लिए महाविद्यालय प्रांगण में पौधरोपण कार्यक्रम प्राचार्य प्रोफेसर मंजुला उपाध्याय के दिशा निर्देशन में आयोजित किया गया। जिसमें मेजर (डॉ) मनमीत कौर सोढ़ी के नेतृत्व में लगभग 100 से अधि ाक पौधे रोपित किए गए। पौध ारोपण में महाविद्यालय की एन. सी. सी, एन.एस.एस. और अन्य छात्राओं ने बड़ी संख्या में प्रतिभाग कर विभिन्न प्रकार के पौधे जैसे, गुलमोहर, अनार, अमरूद, आवंला, शीशम, सागौन, बरगद, नींबू आदि का रोपण किया तथा कुछ पौधे अध्यापिकाओं और छात्राओं को अपने घरों के आस–पास लगाने और उनको संरक्षित करने के आश्वासन के साथ प्रदान किए गए। इस कार्यक्रम में महाविद्यालय की पर्यावरण संरक्षण एवं पुनर्स्थापना समिति की सदस्य प्रो. मंजुला यादव, प्रो नीतू सिंह ,डॉ सरोज रानी, डॉ नेहा यादव एवं डॉ स्नेहा चौधरी तथा अन्य शिक्षिकाओ ने पौधरोपण किया।

स्क्रैप माफिया रवि काना की गर्लफ्रेंड को हाईकोर्ट से जमानत,

२३ अप्रैल को बैंकॉक से डिपोर्ट करके दिल्ली एयरपोर्ट पर किया गया था गिरफ्तार

नोएडा। नोएडा के स्क्रैप माफिया रवि काना की महिला मित्र काजल झा को आखिरकार हाईकोर्ट ने जमानत दे दी। गौरतलब है कि रवि और काजल झा को थाईलैंड के बैंकॉक से डिपोर्ट करने के बाद दिल्ली एयरपोर्ट से गिरफ्तार किया गया था। पुलिस कमिश्नरेट गौतमबुद्ध नगर में स्क्रैप माफिया रवि काना और उसके गिरोह के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की गई है। रवि काना को 23 अप्रैल को थाईलैंड के बैंकॉक से डिपोर्ट करने के बाद दिल्ली एयरपोर्ट से गिरफ्तार किया गया था। रवि काना और काजल झा को जिला न्यायालय में पेश करने के बाद जेल भेज दिया गया था। 27 अप्रैल से रवि काना और काजल झा जेल में बंद हैं। गौतमबुद्ध नगर जिला न्यायालय में काजल झा की जमानत को लेकर दो बार सुनवाई हुई थी, लेकिन यहां से जमानत याचिका को खारिज कर दिया गया। इसके बाद काजल के वकील ने हाईकोर्ट का दरवाजा खटखटाया और इस मामले में अब हाईकोर्ट ने काजल झा को जमानत दे दी है। बता दें कि जब जनवरी में रवि काना और उसके गिरोह के खिलाफ मुकदमा दर्ज हुआ था तो काजल झा और रवि दोनों बैंकॉक चले गए थे और वहीं पर छिपाकर रह रहे थे, लेकिन अप्रैल में पुलिस को इन लोगों की सूचना मिल गई। इसके बाद इन्हें बैंकॉक से डिपोर्ट करवाकर भारत लाया गया। जमानत मिलने के बाद काजल आखिरकार ग्रेटर नोएडा की लूक्सर जेल से 3 महीने बाद बाहर आ गई। वहीं रवि अभी भी जेल में है। गौरतलब है कि रवि व उसके सहयोगियों की करोड़ों रुपए की संपत्ति को कुर्क किया जा चुका है।

कच्चे मकान में लगी आग, लाखों का सामान जलकर खाक

उरई/जालौन। जालौन में एक कच्चे घर में आग लग गई, जिससे घर में रखा घर गृहस्थी का लाखों रुपए का सामान जलकर खाक हो गया। आग की सूचना मिलते ही दमकल की गाड़ी मौके पर पहुंची। जिन्होंने कड़ी में मशक्कत करने के बाद आग पर काबू पाया। घटना एट कोतवाली क्षेत्र के वार्ड नंबर 2 महारानी लक्ष्मीबाई नगर की है। यहां के रहने वाले पूर्व बीडीसी सदस्य देवेंद्र पिरौनिया शुक्रवार रात को परिवार के साथ खाना खाने के बाद लाइट न आने के कारण सभी बच्चों और परिवार सहित सभी लोग छत पर सो रहे थे। तभी शुक्रवार रात को 1.30 की लगभग घर के ही अंदर बनी एक कच्चे मकान के अंदर आग लग गई। आग इतनी विकराल थी कि पूरे मकान को अपनी चपेट में ले लिया। आग की लपटों को देखते हुए देवेंद्र बच्चों सहित छत से उतर कर बाहर निकाल आए और मोहल्ले में शोर मचाना शुरू कर दिया। लाइट न आने के कारण मोहल्लेवासी भी जाग रहे थे। तभी मोहल्ले वालों ने भी मिलकर बाल्टियों से पानी भरकर आग बुझाने की कोशिश की। आग तेज होने पर दमकल की गाड़ी बुलाई तब कहीं जाकर सभी ने आग बुझाई, तब जाकर सभी ने राहत की सांस ली। वहीं मोहल्ले वालों का कहना है कि उस समय लाइट आ रही होती तो समरसिबल द्वारा आग पर काबू पा लिया जाता और इतना नुकसान नहीं होता। वही आग से एक लाख से अधिक रुपए का नुकसान बताया जा रहा है, फिलहाल इस आग से किसी की कोई चोट चपेट एवं जनहानि नहीं हुई।

बैड न्यूज रिव्यू: नाम ही सिर्फ 'ठंक छमू' है, विक्की-तृप्ति के साथ एमी विर्क ने लगाया कॉमेडी का पंच

बैड न्यूज रिव्यू कुछ फिल्में ऐसी होती हैं जिन्हें देखने के लिए दिमाग नहीं लगाना पड़ता बल्कि मैं तो कहूंगा दिमाग को फ्रिज मैं रखकर आना पड़ता है और वैसे भी दिमाग हम हमेशा लगाते हैं, अब फिल्म देखते टाइम भी लगाएं, फिल्म एंटरटेन होने के लिए देखी जाती है और ये फिल्म आपको सिर्फ और सिर्फ एंटरटेन करती है, ये एक मस्त टाइम पास फिल्म है जिसे बिना लॉजिक के देखेंगे तो मजा आएगा।

कहानीः तृप्ति डिमरी प्रेग्नेंट हो जाती हैं लेकिन ये नहीं पता कि बच्चा किसका है. उनके एक्स हसबैंड विक्की कौशल का, या उनके बॉस एमी विर्क का, डॉक्टर बताते हैं ये दोनों का है और ऐसा लाखों में एक केस होता है, जिसे 'हीट्रोपैटर्नल सुपरफेकेंडेशन' कहते हैं. अब बच्चे का बाप कौन, यही कहानी है, बाकी की कहानी थिएटर में देखिएगा।

कैसी है फिल्मः ये फिल्म बिना लॉजिक के देखेंगे तो अच्छी लगेगी, मजा आएगा, आप एंटरटेन होंगे, शुरूआत ठीक ठाक है, फिर फिल्म पेस पकड़ती है. सेकेंड हाफ में थोड़ा सा निराश करती है, बीच–बीच में कई ऐसे सीन आते हैं जहां आप हंसते हैं, आपको मजा आता है, हां कोई ऐसा सीन नहीं है जिसमें आप पेट पकड़कर हंसे लेकिन विक्की कौशल अपने चार्म से आपको थिएटर की सीट से चिपकाए रखते हैं. ये फिल्म बिना दिमाग का इस्तेमाल किए देखिए, ये क्यों हुआ, इसका क्या लॉजिक है, तृप्ति का कैरेक्टर ऐसा क्यों कर रहा है, ये सब सोचेंगे तो फिल्म में कई कमियां दिखेंगी जो हर फिल्म में होती हैं।

इसमें भी हैं थोड़ा और अच्छा स्क्रीनप्ले हो सकता था, कुछ और कॉमिक पंच डाले जा सकते थे, थोड़ी और अच्छी कॉमिक सिचुएशन डाली जा सकती है और अगर ऐसा होता तो ये फिल्म और शानदार बनती लेकिन इसके बावजूद ये फिल्म आपको एंटरटेन करने में कामयाब होती है और पूरा थिएटर एंड में विक्की के गाने तौबा तौबा को देखने के लिए रुकता है, विक्की की एनर्जी कमाल है और अब विक्की कौशल जिस गाने पर डांस कर लेते हैं वो वायरल होता है, वो बॉलीवुड के बेस्ट डांसर्स में से एक भी बनते जा रहे हैं और अब उन्हें एक बोर्ड लगा देना चाहिए कि हमारे यहां गाने वायरल किए जाते हैं।

एक्टिंगः विक्की कौशल फिल्म की जान हैं, वो हर सीन में कमाल हैं. वो चाप बेचने वाले अखिल चड्ढा के किरदार में हैं जो ओवर द टॉप है और विक्की इस किरदार को बखूबी निभाते हैं। उनकी रेंज हैरान करती है, कहां सैम बहादुर का सैम और कहां ये किरदार, विक्की अपनी एक्टिंग के हुनर को निखार रहे हैं और बहुत से लोग सिर्फ उनके लिए ये फिल्म देख सकते हैं, एमी विर्क अच्छे लगे हैं,उनकी कॉमिक टाइमिंग शानदार है, विक्की के साथ उनकी केमिस्ट्री अच्छी है, तृप्ति डिमरी का काम भी अच्छा है, वो लगी भी खूबसूरत हैं, नेहा धूपिया ने अच्छा काम किया है, अनन्या पांडे का केमियो भी देखने को मिलेगा और वो खुद देखकर बताइएगा कैसा लगा।

डायरेक्शनः आनंद तिवारी का डायरेक्शन ठीक है, उनके पास बड़े सितारे थे और अगर स्क्रिप्ट में थोड़ा और दम होता तो ये और शानदार फिल्म बनती. सेकेंड हाफ पर और मेहनत करने की जरूरत थी।

अपबाल

म्यूजिकः फिल्म का म्यूजिक अच्छा है, पुराने गानों का बखूबी इस्तेमाल किया गया है, 'तौबा तौबा' तो हर जगह वायरल है, कई लोगों ने मिलकर फिल्म का म्यूजिक बनाया है।

कठिन, लेकिन जिंदगी कभी आसान नहीं होती, बेटे के तलाक की खबरों के बीच बिग बी ने लिखी ये बड़ी बात

अकसर देखा जाता है कि सेलेब्स को लेकर जो अफवाहें उड़ती हैं उनमें से कुछ सच निकल ही जाती हैं। हार्दिक पांड्या और नताशा स्टेनकोविक को लेकर भी कुछ ऐसा ही हुआ जो लोग उनके अलग होने की खबरों पर विश्वाश नहीं कर रहे थे उन्हें तब झटका लगा जब क्रिकेटर ने खुद इसका ऐलान किया। इसी तरह की अफवाहें फैल रही हैं अभिषेक बच्चन और ऐश्वर्या राय बच्चन को लेकर जिसने फैंस को काफी निराश कर दिया है। बॉलीवुड की इस सबसे फेमस जोड़ी के अलग होने की खबरों ने कई लोगों का दिल तोड़ दिया है। पिछले कुछ समय से अभिषेक और ऐश्वर्या के बीच कुछ ठीक ना होने के सबूत भी मिल रहे हैं। पहले अंबानी की शादी में इन दोनों का अलग–अगल आना फिर अभिषेक का तलाक के पोस्ट पर रिएक्ट करना। इस तरह की बातें अफवाहों को तूल दे रही है। हालांकि फैंस नहीं चाहते कि यह जोड़ी कभी टूटे पर होगा तो वहीं जो इनकी किस्मत तय करेगी। बेटे अभिषेक के तलाक के पोस्ट पर लाइक करने के बाद अमिताभ बच्चन का एक पोस्ट भी तेजी से वायरल हो रहा है। उन्होंने लिखा–काम पर वापसी, कठिन.... लेकिन जिंदगी कभी आसान नहीं होती। अब उनके इस पोस्ट को अभिषेक और ऐश के रिश्ते में अनबन से जोड़कर देखा जा रहा है। बता दें कि ऐश्वर्या अपने सास–ससुर के साथ नहीं रहती हैं। फिल्म मनमर्जियां के प्रमोशन के दौरान अभिषेक से जब घर का नाम पूछा गया तो उन्होंने कहा– जलसा में मेरे माता–पिता रहते हैं. मैं वत्स में रहता हूं जो इसके बगल में है. अभिषेक के इस जवाब के बाद से हर ही कोई ये कयास लगा रहा था कि ऐश्वर्या अपने सास–ससुर के साथ नहीं रहती हैं।

साड़ी हमेशा से मेरे दिल में एक खास जगह रखती है : नीता लुल्ला

ऐश्वर्या राय बच्चन, माधुरी दीक्षित समेत कई बॉलीवुड हसीनाएं मशहूर डिजाइनर नीता लुल्ला की डिजाइन की गई कॉस्ट्यूम को पहनना पसंद करती हैं। हाल ही में नीता ने लहर नाम से अपने लेटेस्ट कॉन्सेप्ट साड़ी कलेक्शन को लॉन्च किया है और बताया कि नौ गज की यह साड़ी उनके लिए खास क्यों है। अपने नए कलेक्शन के बारे में लुल्ला ने कहा, साड़ी हमेशा से मेरे दिल में खास जगह रखती है। इसकी खूबसूरती और अंदाज बेजोड़ है। डिजाइनर ने कहा, लहर के साथ, मैं इसमें युवापन और मॉडर्न सेंसिबिलिटी शामिल करना चाहती थी। नया लहर कलेक्शन बिल्कुल वैसा ही है और यह मॉडर्न महिला के लिए एकदम सही पहनावा है। बयान के अनुसार, हाउस ऑफ नीता लुल्ला द्वारा एनआईएसएसएचके के कलेक्शन को साड़ी के लिए एक लव लेटर के रूप में डिस्क्राइब किया गया है, इसे मॉडर्न महिला के लिए फिर से तैयार किया गया है। कलर पैलेट कई अवसरों, जैसे शादी और संगीत समारोह से लेकर कलरफुल हल्दी सेरेमनी और शानदार पार्टियों के लिए बनाया गया है। इस कलेक्शन में रफल्स वाली साड़ियां और बस्टियर शामिल हैं। उल्लेखनीय नए फीचर्स में मोबाइल पॉकेट, बेल्ट और गोल्ड बकल शामिल हैं। मार्च में, लुल्ला ने इंडस्ट्री में 40 साल पूरे होने का जश्न मनाया और आईएएनएस से बात करते हुए बताया कि उनका यह सफर आसान नहीं था। उन्हें काफी संघर्ष करना पड़ा। लुल्ला ने कहा, एक फैशन डिजाइनर होने के अलावा, मैं एक कॉस्ट्यूम डिजाइनर, एक हाउसवाइफ और एक मां भी हूं। इन सभी रोल्स को निभा पाना और एक रोल से दूसरे रोल में सहजता से बदलाव लाना काफी मुश्किल काम है। लुल्ला ने 300 से ज्यादा फिल्मों में काम किया है और 1985 से वेडिंग ड्रेसेस डिजाइन कर रही हैं। बॉलीवुड में उनका कोई गॉडफादर नहीं है, अपनी मेहनत और लगन के दम पर उन्होंने इंडस्ट्री में अपनी अलग पहचान बनाई।

सायंतनी घोष ने कहा, भारतीय शास्त्रीय नृत्य शुरू से ही मेरा जुनून रहा है

शो दहेज दासी में अपने नृत्य कौशल का प्रदर्शन करने वाली एक्ट्रेस सायंतनी घोष ने कहा कि भारतीय शास्त्रीय नृत्य शुरू से ही उनका जुनून रहा है। हालांकि उन्हें कभी भी इसे औपचारिक रूप से सीखने का मौका नहीं मिला। सायंतनी ने कहा, जब मैं छह या सात साल की थी, तब मेरे माता–पिता ने मुझे कुछ महीनों के लिए एक सामान्य नृत्य कक्षा में डाल दिया था। उस समय आप ज्यादा कुछ सीख नहीं पाते हैं, मैं शुरू से ही यह करना चाहती थी। एक्ट्रेस ने कहा, मुझे विशेष रूप से भारतीय शास्त्रीय नृत्य पसंद है, लेकिन अभी तक मुझे इसे सीखने का मौका नहीं मिला है। नृत्य के प्रति मेरा प्यार पहला संकेत था कि मैं एक एक्ट्रेस बनना चाहती थी। कोलकाता में पली–बढ़ी सायंतनी के स्कूल में अक्सर नोबेल पुरस्कार विजेता रवींद्रनाथ टैगोर के नृत्य नाटकों का प्रदर्शन किया जाता था, जिसमें नृत्य के साथ अभिनय और भावनाओं का मिश्रण होता था। सायंतनी ने बताया, "मैं अपने स्कूल के सांस्कृतिक कार्यक्रमों में बहुत सक्रिय थी। तभी से मेरा झुकाव रचनात्मक क्षेत्र की ओर हुआ। भले ही मैंने औपचारिक रूप से नृत्य नहीं सीखा है, लेकिन मुझे यह पसंद है। बस म्यूजिक चलाने की जरूरत है, और मैं डांस करने के लिए तैयार रहती हूं। उन्होंने कहा, पिछले कुछ वर्षों में इंडस्ट्री ने मेरे हुनर को पहचाना और उसे सम्मान दिया है। जब भी लोग ऐसी अभिनेत्रियों के बारे में बात करते हैं जो अच्छा नृत्य कर सकती हैं, तो मेरा नाम निश्चित रूप से उस सूची में आता है। अपने शो में एक डांस सीन पर बात करते हुए एक्ट्रेस ने कहा कि जब शो में डांस की बात आई तो मैं बेहद उत्साहित थी। उन्होंने कहा, हम एक महा एपिसोड कर रहे थे जहां एक तांडव की आवश्यकता थी, वह काली शक्तियों को जीवंत करने के लिए तांडव कर रही थी। सबसे अच्छी बात यह थी कि मुझे इसे कोरियोग्राफ करने का मौका मिला। मेरे निर्माता जानते थे कि मैं एक अच्छी डांसर हूं और उन्होंने मुझे नृत्य को कोरियोग्राफ करने का अवसर दिया। एक्ट्रेस ने कहा, तांडव में काली शक्तियों को बुलाने के लिए अत्यधि ाक ऊर्जावान होना जरूरी है, और मैंने इसमें अपनी दिल और आत्मा झोंक दी। इसके बाद जो प्रतिक्रिया सामने आई वह अद्भुत थी।

एकता कपूर ने बेटे के साथ श्री दुर्गा परमेश्वरी मंदिर में लिया भगवान का आशीर्वाद

टीवी से लेकर फिल्म इंडस्ट्री में एकता कपूर की अपनी अलग ध ााक है। अब वह ओटीटी क्वीन भी बन चुकी हैं। वह सोशल मीडिया पर काफी एक्टिव रहती हैं। इसी कड़ी में उन्होंने कर्नाटक के मंगलुरु में श्री दुर्गा परमेश्वरी मंदिर से कुछ तस्वीरें शेयर की। एकता ने इंस्टाग्राम स्टोरीज पर अपने बेटे रवि कपूर के साथ दुर्गा परमेश्वरी मंदिर की यात्रा की कई क्लिप और तस्वीरें शेयर की। पहले वीडियो में मंदिर की झलक देखने को मिल रही है। वहीं दूसरे वीडियो में बहती नदी दिखाई दे रही है। जियोटैग में श्री दुर्गा परमेश्वरी मंदिर, मंगलुरुश टैग है। तीसरी इंस्टा स्टोरी में एकता ने अपने पांच साल के बेटे रवि के साथ सेल्फी शेयर की है। बता दें कि एकता ने अभी शादी नहीं की है। वह 2019 में सरोगेसी के जरिए मां बनीं। उन्होंने बेटे रवि का स्वागत किया। उसका नाम दिग्गज स्टार व पिता जीतेंद्र के नाम पर रखा गया, जिनका असली नाम रवि कपूर है। एकता को 2020 में पद्मश्री से सम्मानित किया गया। वह बालाजी टेलीफिल्म्स लिमिटेड की ज्वाइंट मैनेजिंग डायरेक्टर

और क्रिएटिव हेड हैं। इसकी शुरुआत उन्होंने 1994 में की थी। उन्होंने 2001 में बालाजी मोशन पिक्चर्स और 2017 में वीडियो–ऑन–डिमांड प्लेटफॉर्म ऑल्ट बालाजी लॉन्च किया। 2023 में, उन्हें 51वें इंटरनेशनल एमी अवॉर्ड्स में इंटरनेशनल एमी डायरेक्टरेट अवॉर्ड से सम्मानित किया गया।

उनकी लाइफ की बात करें तो उन्होंने अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद एडवरटाइजिंग कंपनी में जॉब करना शुरू किया। इस दौरान उन्हें सीरियल बनाने का आइडिया आया और श्मानो या ना मानो से टीवी इंडस्ट्री में डेब्यू किया। इसके बाद उन्होंने कॉमेडी प्रोग्राम हम पांच बनाया, लेकिन लोकप्रियता सास–बहू शो से मिला। एकता कपूर ने स्टार प्लस पर श्क्योंकि सास भी कभी बहू थी सीरियल बनाया। इस सीरियल को लोगों ने काफी पसंद किया। अपने लिए क को लकी मानकर उन्होंने आगे के भी सीरियल्स के नाम भी श्कश से रखे, इसमें कहानी घर–घर की, कुटुंब, कहीं किसी रोज, कैसा ये प्यार है, कुंडली भाग्य जैसे हिट सीरियल शामिल हैं। इन सबसे अलग उन्होंने सुपरनेचुरल शोज, जैसे नागिन से दर्शकों का मनोरंजन किया। वह बैक–टू–बैक नागिन के कई सीजन लेकर आईं। उन्होंने शूटआउट एट लोखंडवाला, वन्स अपॉन ए टाइम इन मुंबई, एक विलेन, ड्रीम गर्ल, कथल, थैंक यू फॉर कमिंग और क्रू जैसी फिल्मों का निर्माण भी किया।

अवध की आवाज हिन्दी दैनिक, प्रकाशक ,मुद्रक व स्वामी,अनिल कुमार सिंह द्वारा स्काई लाइन प्रिन्टर्स,119/23 खन्दारी लेन, लालबाग, लखनऊ उ0प्र0 से मुद्रित तथा डी–97/3 व 7,सेक्टर–7, इन्दिरा नगर,लखनऊ,उ0प्र0 से प्रकाशित। सम्पादक अनिल कुमार सिंह फोन : 0522–4340954 मो0–7905407289, Email: avadhkiaawaz@gmail.com

R.N.I.- UPHIN/2012/45127

नोट : समाचार पत्र से सम्बंधित सारे विवादोंका न्याय क्षेत्र लखनऊ होगा।